130वां संस्करण
जनवरी 2026

मन की बात

स्टार्टअप इंडिया : उत्कृष्ट उद्यमशीलता का एक दशक

स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना

प्रधानमंत्री रोज़गार सृजन कार्यक्रम

स्टार्टअप्स के लिए फंड ऑफ फंड्स योजना

स्टार्टअप्स के लिए ऋण गारंटी योजना

अटल इनोवेशन मिशन

MeitY स्टार्टअप हब

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

प्रधानमंत्री का सन्देश

सूची क्रम

मुख्य आलेख

20 **2016 से 2026 :** स्टार्टअप इंडिया के दस वर्ष

32 **तमसा से अनंतपुर तक :** हमारे इकोसिस्टम की संजीवनी का पुनरुद्धार

36 **'भजन क्लबिंग' का उदय :** नए सुरों में भक्ति का रंग

44 **महान भारतीय परिवार :** एकता और वैश्विक प्रेरणा की परम्परा

48 **सरहदों के पार अपनी जड़ों को सींचता भारतीय समुदाय**

52 **स्वच्छता के लिए जन भागीदारी :** अरुणाचल के पर्वतों से चेन्नई के तटों तक

संक्षेप में

40 **'मन की बात' से गणतंत्र दिवस समारोह तक :** देश के प्रेरणादायक नागरिकों का सम्मान

64 **श्री अन्न :** भूले-बिसरे अनाज से जन-आंदोलन तक का सफर

58 **धरती के प्रहरी :** भारत के हरित संरक्षकों का उत्सव

लेख

24 **परिकल्पना से वास्तविकता तक :** भारत में स्टार्टअप क्रांति के दस वर्ष – पवन कुमार चंदना

28 **ज़ीरो डिफ़ेक्ट, ज़ीरो इफ़ेक्ट** 'मेड इन इंडिया' ब्रांड को पहुँचाए नई ऊँचाईयों पर –जक्षय शाह

60 **श्री अन्न :** सर्दियों में भारत को स्वस्थ रखने वाले पौष्टिक अनाज – डॉ. देवेश चतुर्वेदी

67 प्रतिक्रियाएँ

मेरे प्यारे देशवासियो
नमस्कार

साल 2026 का यह पहला 'मन की बात' है। कल 26 जनवरी को हम सभी 'गणतंत्र दिवस' का पर्व मनाएंगे। इसी दिन हमारा संविधान लागू हुआ था। 26 जनवरी का ये दिन हमें अपने संविधान निर्माताओं को नमन करने का अवसर देता है। **आज 25 जनवरी का दिन भी बहुत अहम है। आज 'National Voters' Day' है, 'मतदाता दिवस' है। मतदाता ही लोकतंत्र की आत्मा होता है।**

साथियो, आमतौर पर जब कोई 18 साल का हो जाता है, मतदाता बन जाता है तो उसे जीवन का एक सामान्य पड़ाव समझा जाता है। लेकिन, दरअसल ये अवसर किसी भी भारतीय के जीवन का बहुत बड़ा milestone होता है। **इसलिए बहुत ज़रूरी है कि हम देश में वोटर बनने का, मतदाता बनने का, उत्सव मनाएँ। जैसे हम जन्मदिन पर शुभकामनाएँ देते हैं** और उसे celebrate करते हैं, ठीक वैसे ही,

जब भी कोई युवा पहली बार मतदाता बने तो पूरा मोहल्ला, गाँव या फिर शहर एकजुट होकर उसका अभिनंदन करे और मिठाइयाँ बांटी जाएं। **इससे लोगों में voting के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। इसके साथ ही यह भावना और सशक्त होगी कि एक वोटर होना कितना मायने रखता है।**

साथियो, देश में जो भी लोग चुनावी प्रक्रिया से जुड़े रहते हैं, जो हमारे लोकतंत्र को जीवंत बनाए रखने के लिए ज़मीनी-स्तर पर काम करते हैं, मैं उन सभी की बहुत सराहना करना चाहूँगा। आज 'मतदाता दिवस' पर मैं अपने युवा साथियों से फिर आग्रह करूँगा कि वे 18 साल का होने पर voter के रूप में खुद को ज़रूर register करें। संविधान ने हर नागरिक से जिस कर्त्तव्य भावना के पालन की अपेक्षा रखी है, इससे वो अपेक्षा भी पूरी होगी और भारत का लोकतंत्र भी मज़बूत होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, इन दिनों मैं social media पर एक interesting trend देख रहा हूँ। लोग साल 2016 की अपनी यादों को फिर से ताजा कर रहे हैं। उसी भावना के साथ, आज मैं भी आपके साथ अपनी एक memory को share करना चाहता हूँ। **दस साल पहले, जनवरी 2016 में हमने एक ambitious journey की शुरुआत की थी।** तब हमें इस बात का एहसास

था कि भले ही ये एक छोटा क्यों ना हो ये, लेकिन ये युवा–पीढ़ी के लिए, देश के future के लिये, काफी अहम है। तब कुछ लोग ये समझ ही नहीं पाए थे कि ये आखिर है क्या? **साथियो, मैं जिस journey की बात कर रहा हूँ, वह है start-up India की journey।** इस अद्भुत journey के heroes हमारे युवा साथी हैं। अपने comfort zone से बाहर निकल कर उन्होंने जो innovation किए, वो इतिहास में दर्ज हो रहे हैं।

साथियो, **भारत में आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा start-ups ecosystem बन चुका है। ये start-ups लीक से हट के हैं। आज वे ऐसे sectors में काम कर रहे हैं, जिनके बारे में 10 साल पहले तक कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।** AI, Space, Nuclear Energy, Semi Conductors, Mobility, Green Hydrogen, Biotechnology आप नाम लीजिए और कोई न कोई भारतीय Start-up उस sector में काम करते हुए दिख जाएगा। **मैं अपने उन सभी युवा साथियों को salute करता हूँ जो किसी-न-किसी Start-up से जुड़े हैं या फिर अपना Start-up शुरू करना चाहते हैं।**

साथियो, आज 'मन की बात' के माध्यम से मैं देशवासियों, विशेषकर industry और Start-up से जुड़े युवाओं से एक आग्रह ज़रूर करना चाहता हूँ। भारत की economy तेज़ी से आगे बढ़ रही है। भारत पर दुनिया की नज़रें हैं। ऐसे समय में हम सब पर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी भी है। वो ज़िम्मेदारी है – quality पर ज़ोर देने की। होती है, चलती है, चल जाएगा, यह युग चला गया। आइए, इस वर्ष हम पूरी ताकत से quality को प्राथमिकता दें। **हम सबका एक ही मंत्र हो quality,**

quality और सिर्फ quality। कल से आज बेहतर quality। हम जो भी manufacture कर रहे हैं, उसकी quality को बेहतर बनाने का संकल्प लें। चाहे हमारे textiles हो, technology हो या फिर electronics, even packaging, Indian product का मतलब ही बन जाए – Top quality। आइए, excellence को हम अपना bench mark बनाएं। हम संकल्प लें quality में ना कोई कमी होगी, ना quality से कोई समझौता होगा और **मैंने तो लाल किले से कहा था 'Zero defect – Zero effect'. ऐसा करके ही हम विकसित भारत की यात्रा को तेज़ी से आगे ले जा पाएंगे।**

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश के लोग बहुत innovative हैं। समस्याओं का समाधान ढूँढना हमारे देशवासियों के स्वभाव में है। कुछ लोग ये काम start-ups के ज़रिये करते हैं, तो कुछ लोग समाज की सामूहिक शक्ति से रास्ता निकालने का प्रयास करते हैं। ऐसा ही एक प्रयास उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ में सामने आया है। यहाँ से होकर गुजरने वाली तमसा नदी को लोगों ने नया जीवन दिया है। तमसा केवल एक नदी नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत की सजीव धारा है। अयोध्या से निकल कर गंगा में समाहित होने वाली यह नदी कभी इस क्षेत्र के लोगों के जन-जीवन की धुरी हुआ करती थी, लेकिन प्रदूषण की वजह से इसकी अविरल धारा में रुकावट आने लगी थी। गाद, कूड़ा-कचरा और गंदगी ने इस नदी के प्रवाह को रोक दिया था। इसके बाद यहाँ के लोगों ने इसे एक नया जीवन देने का अभियान शुरू किया। नदी की सफाई की गई और उसके किनारों पर छायादार, फलदार पेड़ लगाए गए। स्थानीय लोग कर्तव्य भावना से इस काम में जुटे और सबके प्रयास से नदी का पुनरुद्धार हो गया।

साथियो, जन-भागीदारी का ऐसा ही प्रयास आंध्र प्रदेश के अनंतपुर में भी

देखने को मिला है। यह वह क्षेत्र है जो सूखे की गम्भीर समस्या से जूझता रहा है। यहाँ की मिट्टी, लाल और बलुई है। यही वजह है कि लोगों को पानी की कमी का सामना करना पड़ता है। यहाँ के कई क्षेत्रों में लंबे समय तक बारिश नहीं होती है। कई बार तो लोग अनंतपुर की तुलना रेगिस्तान में सूखे की स्थिति से भी कर देते हैं।

साथियो, इस समस्या के समाधान के लिये स्थानीय लोगों ने जलाशयों को साफ करने का संकल्प लिया। फिर प्रशासन के सहयोग से यहाँ 'अनंत नीरू संरक्षणम प्रोजेक्ट' इसकी शुरुआत हुई। इस प्रयास के तहत 10 से अधिक जलाशयों को जीवनदान मिला है। उन जलाशयों में अब पानी भरने लगा है। इसके साथ ही 7000 से अधिक पेड़ भी लगाए गए हैं। यानी अनंतपुर में जल संरक्षण के साथ-साथ green cover भी बढ़ा है। यहाँ बच्चे अब तैराकी का आनंद भी ले सकते हैं। एक प्रकार से कहें तो यहाँ का पूरा ecosystem फिर से निखर उठा है।

साथियो, आजमगढ़ हो, अनंतपुर हो, या फिर देश की कोई और जगह, ये देखकर खुशी होती है कि लोग एकजुट होकर कर्तव्य भाव से बड़े संकल्प सिद्ध कर रहे हैं। जन-भागीदारी और सामूहिकता की यही भावना हमारे देश की सबसे बड़ी ताकत है।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश में भजन और कीर्तन सदियों से हमारी संस्कृति की आत्मा रहे हैं। हमने मंदिरों में भजन सुने हैं, कथा सुनते वक्त सुने हैं और हर दौर ने भक्ति को अपने समय के हिसाब से जिया है। **आज की पीढ़ी भी कुछ नए कमाल कर रही है। आज के युवाओं ने भक्ति को अपने अनुभव और अपनी जीवन-शैली में ढाल दिया है।** इसी सोच से एक नया सांस्कृतिक चलन उभर कर सामने आया है। आपने

social media पर ऐसे video ज़रूर देखे होंगे। देश के अलग-अलग शहरों में बड़ी संख्या में युवा इकट्ठा हो रहे हैं। मंच सजा होता है, रोशनी होती है, संगीत होता है, पूरा ताम-झाम होता है और माहौल किसी concert से ज़रा भी कम नहीं होता है। ऐसा ही लग रहा है कि जैसे कोई बहुत बड़ा concert हो रहा है, लेकिन वहाँ जो गाया जा रहा होता है वो पूरी तन्मयता के साथ, पूरी लगन के साथ, पूरी लय के साथ भजन की गूंज। **इस चलन को आज 'भजन clubbing' कहा जा रहा है और यह खासतौर पर Genz के बीच तेज़ी से लोकप्रिय हो रहा है। यह देखकर अच्छा लगता है कि इन आयोजनों में भजन की गरिमा और शुचिता का पूरा ध्यान रखा जाता है।** भक्ति को हल्केपन में नहीं लिया जाता। ना शब्दों की मर्यादा टूटती है और ना ही भाव की। मंच आधुनिक हो सकता है, संगीत की प्रस्तुति अलग हो सकती है, लेकिन मूल भावना वही रहती है। अध्यात्म का एक निरंतर प्रवाह वहाँ अनुभव होता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज हमारी संस्कृति और त्योहार दुनिया भर में अपनी पहचान बना रहे हैं। दुनिया के हर कोने में भारत के त्योहार बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाए जाते हैं। **हर तरह की cultural vibrancy को बनाए रखने में हमारे भारतवंशी भाई-बहनों का अहम योगदान है। वो जहाँ भी है, वहाँ अपनी संस्कृति की मूल भावना को संरक्षित कर और उसे आगे बढ़ा रहे हैं। इसको लेकर मलेशिया में भी हमारा भारतीय समुदाय बहुत सराहनीय कार्य कर रहा है।** आपको यह जान कर सुखद आश्चर्य होगा कि मलेशिया में 500 से ज़्यादा तमिल स्कूल हैं। इनमें तमिल भाषा की पढ़ाई के साथ

ही अन्य विषयों को भी तमिल में पढ़ाया जाता है। इसके अलावा, यहाँ तेलुगु और पंजाबी सहित अन्य भारतीय भाषाओं पर भी बहुत focus रहता है।

साथियो, भारत और मलेशिया के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत करने में एक society की बड़ी भूमिका है, इसका नाम है 'Malaysia India Heritage Society'। अलग-अलग कार्यक्रमों के साथ ही, यह संस्था एक heritage walk का भी आयोजन करती है। इसमें दोनों देशों को आपस में जोड़ने वाले सांस्कृतिक स्थलों को cover किया जाता है। पिछले महीने मलेशिया में 'लाल पाड़ साड़ी' iconic walk इसका आयोजन किया गया। इस साड़ी का बंगाल की हमारी संस्कृति से विशेष नाता रहा है। इस कार्यक्रम में सबसे अधिक संख्या में इस साड़ी को पहनने का record बना, जिसे Malaysian Book of Records में दर्ज किया गया। इस मौके पर ओडिसी dance और baul music ने तो लोगों का दिल जीत लिया। मैं कह सकता हूँ –

साया बरबांगा/ देंगान डीयास्पोरा इंडिया/दि मलेशिया //

मेरेका मम्बावा/इंडिया दान मलेशिया/सेमाकिन रापा //

(हिन्दी अनुवाद – मुझे मलेशिया में भारतीय प्रवासियों पर गर्व है, भारत और मलेशिया को वो और करीब ला रहे हैं।)

मलेशिया के हमारे भारतवंशियों को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, हम भारत के किसी भी हिस्से में चले जाएँ, वहाँ हमें कुछ-न-कुछ असाधारण, अभूतपूर्व होते हुए ज़रूर दिख जाता है। कई बार Media की चकाचौंध में ये बातें जगह नहीं बना पातीं। लेकिन इनसे पता चलता है कि हमारे समाज की असली शक्ति क्या है? इनसे हमारे उन Value Systems की भी झलक मिलती है,

जिनमें एकजुटता की भावना सर्वोपरि है। गुजरात में बेचराजी के चंदनकी गाँव की परम्परा अपने आप में अनूठी है। अगर मैं आपसे कहूँ कि यहाँ के लोग, विशेषकर बुजुर्ग, अपने घरों में खाना नहीं बनाते तो आपको हैरत होगी। इसकी वजह गाँव का शानदार Community kitchen। इस Community kitchen में एक साथ पूरे गाँव का, सब का खाना बनता है और लोग एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। बीते 15 वर्षों से यह परम्परा निरंतर चली आ रही है। इतना ही नहीं, यदि कोई व्यक्ति बीमार है तो उसके लिए Tiffin Service भी उपलब्ध है, यानी home delivery का भी पूरा इंतज़ाम है। गाँव का यह सामूहिक भोजन लोगों को आनंद से भर देता है। ये पहल न केवल लोगों को आपस में जोड़ती है, बल्कि इससे पारिवारिक भावना को भी बढ़ावा मिलता है।

साथियो, भारत की परिवार व्यवस्था - Family System हमारी परम्परा का अभिन्न हिस्सा है। दुनिया के कई देशों में इसे बहुत कौतूहल के साथ देखा जाता है। कई देशों में ऐसे family system को लेकर बहुत सम्मान का भाव है। कुछ दिन पहले ही मेरे Brother U.A.E. के राष्ट्रपति महामहिम शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान भारत आए थे। उन्होंने मुझे बताया कि U.A.E. साल 2026 को year of family के रूप में मना रहा है। मकसद ये कि वहाँ के लोगों के बीच सौहार्द और सामुदायिक भावना और मज़बूत हो, वाकई ये बहुत ही सराहनीय पहल है।

साथियो, जब परिवार और समाज की ताकत मिलती है, तो हम बड़ी-से-बड़ी चुनौतियों को परास्त कर सकते हैं। मुझे अनंतनाग के शेखगुन्ड गाँव के बारे में

जानकारी मिली है। यहाँ drugs, तंबाकू, सिगरेट और शराब से जुड़ी चुनौतियाँ काफी बढ़ गई थी। इन सबको देखकर यहाँ के मीर जाफ़र जी इतना परेशान हुए कि उन्होंने इस समस्या को दूर करने की ठान ली। उन्होंने गाँव के युवाओं से लेकर बुज़ुर्गों तक सभी को एकजुट किया। उनकी इस पहल का असर कुछ ऐसा रहा कि वहाँ की दुकानों ने तंबाकू उत्पादों को बेचना ही बंद कर दिया। इस प्रयास से Drugs के खतरों को लेकर भी लोगों में जागरूकता बढ़ी है।

साथियो, हमारे देश में ऐसी अनेक संस्थाएं भी हैं, जो वर्षों से निस्वार्थ भाव से समाज सेवा में जुटी हैं। जैसे एक संस्था है पश्चिम बंगाल के पूर्व मेदिनीपुर के फरीदपुर में। इसका नाम है 'विवेकानंद लोक शिक्षा निकेतन'। ये संस्था पिछले चार दशक से बच्चों और बुज़ुर्गों की देखभाल में जुटी है। गुरुकुल पद्धति की शिक्षा और teachers की training के साथ ही यह संस्था समाज कल्याण के कई नेक कार्यों में जुटी है। मेरी कामना है कि निस्वार्थ सेवा का यह भाव देशवासियों के बीच निरंतर और अधिक सशक्त होता रहे।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में हम निरंतर स्वच्छता के विषय को उठाते रहे हैं। मुझे ये देख कर गर्व होता है हमारे युवा अपने आसपास की स्वच्छता को लेकर बहुत सजग हैं। अरुणाचल प्रदेश में हुए एक ऐसे ही अनूठे प्रयास के बारे में मुझे जानकारी मिली है। अरुणाचल वो धरती है जहाँ देश में सबसे पहले सूर्य की किरणें पहुँचती हैं। यहाँ लोग 'जय हिन्द' कहकर एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं। यहाँ ईटानगर में युवाओं का समूह उन हिस्सों की सफाई के लिए एकजुट हुआ, जिन पर ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत थी। इन युवाओं ने अलग-अलग शहरों में सार्वजनिक स्थलों की साफ-सफाई को अपना mission बना लिया। इसके बाद ईटानगर, नाहरलागुन, दोईमुख, सेप्पा, पालिन और पासीघाट- वहाँ भी ये अभियान चलाया गया। ये युवा अब तक करीब 11 लाख किलो से अधिक कचरे की सफाई कर चुके हैं। सोचिए दोस्तो,

नौजवानों ने मिलकर के 11 लाख किलो कूड़ा-कचरा हटाया।

साथियो, एक और उदाहरण असम का है। असम के नागाँव में वहाँ की पुरानी गलियों से लोग भावनात्मक रूप से जुड़े हैं। यहाँ कुछ लोगों ने अपनी गलियों को मिलकर साफ करने का संकल्प लिया। धीरे-धीरे उनके साथ और लोग जुड़ते गए। इस तरह एक ऐसी टीम तैयार हो गई, जिसने गलियों से बहुत सारा कचरा हटा दिया। साथियो, ऐसा ही एक प्रयास बेंगलुरु में हो रहा है। बेंगलुरु में sofa waste एक बड़ी समस्या बनकर सामने आया है इसलिए कुछ professionals एकजुट होकर इस issue को अपने तरीके से solve कर रहे हैं।

साथियो, आज कई शहरों में ऐसी टीमें हैं, जो landfill waste की recycling में जुटी हैं। चेन्नई में ऐसी ही एक team ने बहुत बेहतरीन काम किया है। ऐसे उदाहरणों से पता चलता है कि स्वच्छता से जुड़ा हर प्रयास कितना अहम है। हमें स्वच्छता के लिए व्यक्तिगत तौर पर या फिर टीम के तौर पर अपने प्रयास बढ़ाने होंगे, तभी हमारे शहर और बेहतर बनेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, जब पर्यावरण सरंक्षण की बात होती है, तो अक्सर हमारे मन में बड़ी योजनाएं, बड़े अभियान और बड़े-बड़े संगठन की बातें आती हैं। लेकिन कई बार बदलाव की शुरुआत बहुत साधारण तरीके से होती है। एक व्यक्ति से, एक इलाके से, एक कदम से और लगातार की गई छोटी-छोटी कोशिशों से भी बड़े बदलाव आते हैं। पश्चिम बंगाल के कूच बिहार के रहने वाले बेनॉय दास जी का प्रयास इसी का उदाहरण है। पिछले कई वर्षों से उन्होंने अपने ज़िले को हरा-भरा बनाने का काम अकेले दम पर किया है। बेनॉय दास जी ने हज़ारों पेड़ लगाए हैं। कई बार पौधे खरीदने से लेकर उन्हें

लगाने और देखभाल करने का सारा खर्च खुद उठाया है। जहाँ ज़रूरत पड़ी, वहाँ स्थानीय लोगों, छात्रों और नगर निकायों के साथ मिलकर काम किया। उनके प्रयासों से सड़कों के किनारे हरियाली और बढ़ गई है।

साथियो, मध्य प्रदेश में पन्ना ज़िले के जगदीश प्रसाद अहिरवार जी, उनका प्रयास भी बहुत ही सराहनीय है। वो जंगल में beat–guard के रूप में अपनी सेवाएँ देते हैं। एक बार गश्त के दौरान उन्होंने महसूस किया कि जंगल में मौजूद कई औषधीय पौधों की जानकारी कहीं भी व्यवस्थित रूप से दर्ज नहीं है। जगदीश जी, ये जानकारी अगली पीढ़ी तक पहुँचाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने औषधीय पौधों की पहचान करना और उनका record बनाना शुरू किया। उन्होंने सवा-सौ से ज़्यादा औषधीय पौधों की पहचान की। हर पौधे की तस्वीर, नाम, उपयोग और मिलने के स्थान की जानकारी जुटाई। उनकी जुटाई गई जानकारी को वन विभाग ने संकलित किया और किताब के रूप में प्रकाशित भी किया। इस किताब में दी गई जानकारी अब researcher, छात्रों और वन अधिकारियों के बहुत काम आ रही है।

साथियो, पर्यावरण संरक्षण की यही भावना आज बड़े स्तर पर भी दिखाई दे रही है। इसी सोच के साथ देशभर में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान से आज करोड़ों लोग जुड़ चुके हैं। अब तक देश में 200 करोड़ से .ज्यादा पेड़ लगाए भी जा चुके हैं। ये बताता है कि पर्यावरण संरक्षण को लेकर अब लोग ज़्यादा जागरूक हैं, और किसी-ना-किसी रूप में अपना योगदान देना चाहते हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं आप सभी की एक और बात के लिए बहुत सराहना करना चाहता हूँ - वजह है millets यानी श्रीअन्न। मुझे ये देखकर खुशी है कि श्रीअन्न के प्रति देश के लोगों का लगाव निरंतर बढ़ रहा है। **वैसे तो हमने 2023 को millet year घोषित किया था लेकिन आज तीन साल बाद भी इसको लेकर देश और दुनिया में जो passion और commitment है, वो बहुत उत्साहित करने वाला है।**

साथियो, तमिलनाडु के कल्ल-कुरिची ज़िले में महिला किसानों का एक समूह प्रेरणा स्रोत बन गया है। यहाँ के 'Periyapalayam millet' FPC से लगभग 800 महिला किसान जुड़ी हैं। Millets की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए इन महिलाओं ने Millet Processing Unit की स्थापना की। अब वो millets से बने उत्पादों को सीधे बाज़ार तक पहुँचा रही हैं।

साथियो, राजस्थान के रामसर में भी किसान श्रीअन्न को लेकर innovation कर रहे हैं। यहाँ के Ramsar Organic Farmer Producer Company से 900 से अधिक किसान जुड़े हैं। ये किसान मुख्य रूप से बाजरे की खेती करते हैं। यहाँ बाजरे को process करके ready to eat लड्डू तैयार किया जाता है। इसकी बाज़ार में बड़ी माँग है। इतना ही नहीं साथियों, मुझे तो ये जानकर खुशी होती है, आजकल कई मंदिर ऐसे हैं, जो अपने प्रसाद में सिर्फ millets का उपयोग करते हैं। मैं उन मंदिर के सभी व्यवस्थापकों का हृदय से अभिनंदन करता हूँ, उनकी इस पहल के लिए।

साथियो, Millets श्रीअन्न से अन्नदाताओं की कमाई बढ़ने के साथ ही लोगों की health में भी सुधार की guarantee बनता जा रहा है। Millets पोषण से भरपूर होते हैं, super-food

होते हैं। हमारे देश में सर्दियों का मौसम तो खानपान के लिए बहुत ही अच्छा माना जाता है। ऐसे में इन दिनों हमें श्रीअन्न का सेवन ज़रूर करना चाहिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में हमें एक बार फिर कई अलग-अलग विषयों पर चर्चा करने का अवसर मिला। यह कार्यक्रम हम सभी को अपने देश की उपलब्धियों को महसूस करने और celebrate करने का अवसर देता है। फरवरी में ऐसा ही एक और अवसर आ रहा है। अगले महीने India AI Impact Summit होने जा रही है। इस Summit में दुनियाभर से, विशेषकर Technology के क्षेत्र से जुड़े Expert भारत आएँगे। यह सम्मेलन AI की दुनिया में भारत की प्रगति और उपलब्धियों को भी सामने लाएगा। मैं इसमें शामिल होने वाले हर किसी का हृदय से अभिनंदन करता हूँ। अगले महीने 'मन की बात' में India AI Impact Summit पर हम ज़रूर बात करेंगे। देशवासियों की कुछ अन्य उपलब्धियों की भी चर्चा करेंगे । तब तक के लिए मुझे 'मन की बात' में विदा दीजिए। कल के गणतंत्र दिवस के लिए एक बार फिर आप सभी को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

धन्यवाद।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

2016 से 2026

स्टार्टअप इंडिया के दस वर्ष

2016 से 2026 के बीच का दशक भारत के आर्थिक इतिहास में एक परिवर्तनकारी कालखंड है जिसकी पहचान 'स्टार्टअप इंडिया' की पहल से होती है। 16 जनवरी, 2016 को उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) द्वारा शुरू की गई स्टार्टअप इंडिया की यह एक दशक लम्बी यात्रा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उस मूल दृष्टि पर आधारित है जिसके तहत देश को 'नौकरी खोजने वाली' अर्थव्यवस्था से 'नौकरी सृजित करने वाली' अर्थव्यवस्था की ओर मोड़ना था। यह महत्त्वाकांक्षा पहली बार उनके 2015 के स्वतंत्रता दिवस भाषण में व्यक्त की गई थी, जिसका उद्देश्य नवाचार को लोकतांत्रिक बनाना था ताकि भारत का कोई भी ज़िला या प्रखंड उद्यमशीलता की भावना से अछूता न रहे।

अंतरिक्ष और एआई से लेकर ग्रीन हाइड्रोजन और सेमीकंडक्टर जैसे क्षेत्र जिन्हें पहले 'अकल्पनीय' माना जाता था, उन्हें प्राथमिकता देकर इस दृष्टि ने न केवल एक सुदृढ़ घरेलू इकोसिस्टम बनाया बल्कि भारत को वैश्विक समाधान प्रदाता के रूप में भी स्थापित किया है। यह विकसित भारत @2047 का दीर्घकालिक लक्ष्य साकार करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण आधार बनकर उभरा है। इन दस वर्षों में यह पहल कुछ सौ उद्यमियों को प्रोत्साहित करने की सोच से आगे बढ़कर एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन बन चुकी है जिसने भारत को दुनिया के अग्रणी स्टार्टअप इकोसिस्टम में शामिल कर दिया है।

उद्‌भव और विकास का विस्तार

यह यात्रा स्टार्टअप इंडिया एक्शन प्लान से शुरू हुई जिसमें तीन प्रमुख स्तम्भों– सरलीकरण और सहयोग, वित्तीय सहायता और प्रोत्साहन, तथा उद्योग-अकादमिक साझेदारी के तहत 19 महत्त्वपूर्ण कार्य बिन्दु रेखांकित किए गए। अपने प्रारम्भिक वर्ष में इस पहल ने 502 स्टार्टअप्स को मान्यता दी। लेकिन 2026 में दशक के अंत तक यह संख्या बढ़कर 2,00,000 से अधिक डीपीआईआईटी-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स तक पहुँच गई जो इस तंत्र का व्यापक विस्तार और परिपक्वता दर्शाती है। यह विकास केवल महानगरों तक सीमित नहीं रहा; अब लगभग 52 प्रतिशत स्टार्टअप्स टियर-II और टियर-III शहरों में उभर रहे हैं जो एक विकेंद्रीकृत और समावेशी उद्यमशील क्रान्ति का संकेत है।

यूनिकॉर्न और आर्थिक प्रभाव

जहाँ रिपोर्ट स्टार्टअप्स की विशाल संख्या को रेखांकित करती है वहीं उच्च-मूल्य वाली इकाइयों यानी 'यूनिकॉर्न्स' का विकास, नवाचार की गुणवत्ता का सशक्त प्रमाण पेश करता है। पहल के तहत कर

छूट जैसे उपाय विशेषकर धारा 80-IAC के तहत तीन वर्ष तक आयकर अवकाश की सुविधा तथा 'एंजिल टैक्स' समाप्त करने और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने पर बल दिए जाने से स्टार्टअप्स तेज़ी से विस्तार कर सके। इन उपक्रमों ने 2024 के अंत तक कुल 12 लाख 42 हज़ार से अधिक प्रत्यक्ष रोज़गार पैदा किए जिसमें महिला-नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स का महत्त्वपूर्ण योगदान है जो कुल मान्यता प्राप्त इकाइयों का अब 48 प्रतिशत हैं।

इन्क्युबेशन हब और मूलभूत ढाँचा

एक दशक लम्बी इस कामयाबी का एक अहम कारण भौतिक और डिजिटल मूलभूत ढाँचे का विकास रहा है। सरकार ने कम उम्र से ही नवाचार को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान एवं विकास (R&D) प्रयोगशालाओं से जुड़े इनक्यूबेशन केंद्रों तथा स्कूलों में टिंकरिंग लैब्स की स्थापना को प्राथमिकता दी। स्टेट्स स्टार्टअप रैंकिंग के पाँचवें संस्करण तक, हज़ारों स्टार्टअप्स को प्रत्यक्ष इन्क्यूबेशन सहायता मिल चुकी थी। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु और गुजरात जैसे राज्यों ने मैंटॉरशिप की गुणवत्ता और संचालन दक्षता बढ़ाने के लिए क्रमशः 200 और 300 से अधिक राज्य-प्रायोजित इन्क्यूबेटर्स को प्रशिक्षित किया। इसके अलावा, सार्वजनिक प्रयासों के साथ-साथ निजी बुनियादी ढाँचे का भी विस्तार हुआ है; समीक्षा अवधि के दौरान अकेले महाराष्ट्र में ही 1700 से अधिक निजी इन्क्यूबेटर्स सक्रिय पाए गए।

वित्तपोषण और वित्तीय तंत्र

महत्त्वपूर्ण "फ़ंडिंग गैप" दूर करने के लिए सरकार ने फ़ंड ऑफ फ़ंड्स फ़ॉर स्टार्टअप्स (FFS) और स्टार्टअप इंडिया सीड फ़ंड स्कीम प्रभावी रूप से लागू की। इन पहलों का उद्देश्य, वैचारिक चरण से लेकर अंतिम चरण के विस्तार तक, विकास के विभिन्न स्तरों पर पूंजी उपलब्ध कराना था। रैंकिंग रिपोर्ट के पाँचवें संस्करण के अनुसार, राज्य-नेतृत्व वाले विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 870 से अधिक स्टार्टअप्स को निवेशकों से जोड़ा गया। इसके अलावा, राज्यों ने सीड, वेंचर तथा राज्य-स्तरीय फ़ंड ऑफ फ़ंड्स सहित समर्पित कोष शुरू किए हैं ताकि प्रमुख वित्तीय केंद्रों से परे भी पूंजी की सहज उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके।

आगे की राहः विकसित भारत @2047

स्टार्टअप इंडिया के पहले दशक के समापन के साथ ही अब ध्यान निरन्तर स्थिरता (सस्टेनेबिलिटी) और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता की ओर है। पारिस्थितिकी-तंत्र अब अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा और

जलवायु परिवर्तन जैसे 'अग्रणी' क्षेत्रों को प्राथमिकता दे रहा है, जहाँ वर्तमान में 1320 से अधिक स्टार्टअप्स को स्थिरता-केंद्रित क्षेत्रों में मदद की जा रही है। इस पहल ने राज्यों की स्टार्टअप रैंकिंग के माध्यम से 'सहयोगी और प्रतिस्पर्धी संघवाद' की संस्कृति को बढ़ावा दिया है जिससे भाग लेने वाले सभी 34 राज्य और केंद्रशासित प्रदेश अपनी नीतियाँ सुदृढ़ करने और व्यवसाय में सुगमता बेहतर करने को प्रेरित हुए हैं।

संक्षेप में, कह सकते हैं कि 2016 से 2026 की अवधि में स्टार्टअप इंडिया, एक प्रारम्भिक नीति से विकसित होकर राष्ट्रीय विकास के एक सशक्त इंजन के रूप में उभरा है। वित्तपोषण, बुनियादी ढाँचा और समावेशी नीतिगत सुधारों का सफलतापूर्वक एकीकरण करते हुए इस पहल ने, न केवल एक जीवन्त स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किया बल्कि विकसित भारत@2047 की दृष्टि का मज़बूत आधार भी तैयार किया है जिससे भारत नवाचार और उद्यमिता का वैश्विक केंद्र बना रहे।

क्या आप जानते हैं?

1. 2016 में मात्र 502 मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स से शुरुआत करके 2025 तक यह संख्या बढ़कर DPIIT से मान्यता प्राप्त 2,07,137 से अधिक स्टार्टअप्स हो चुकी है जो एक दशक से भी कम समय में 394 गुना वृद्धि है।
2. यह पारिस्थितिकी-तंत्र अब केवल प्रमुख शहरों तक सीमित नहीं रहा; भारत के 95% ज़िलों में अब कम से कम एक मान्यता प्राप्त स्टार्टअप मौजूद है।
3. 13,000 से अधिक स्टार्टअप्स अब एआई, आईओटी, रोबोटिक्स और नैनो टैक्नोलॉजी सहित उन्नत क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।
4. नवीकरणीय ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन और निरन्तर स्थिरता जैसे क्षेत्रों में अभी 1320 से अधिक स्टार्टअप्स को समर्थन दिया जा रहा है। पंजाब और तेलंगाना जैसे राज्यों ने इन हरित क्षेत्रों में विशेष रूप से 80 से अधिक स्टार्टअप्स की मदद की है।

पवन कुमार चंदना
सीईओ एवं सह-संस्थापक
स्काईरूट एयरोस्पेस

परिकल्पना से वास्तविकता तक

भारत में स्टार्टअप क्रांति के दस वर्ष

2012 की बात है। उस समय मैं आईआईटी-खड़गपुर में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष में पढ़ रहा था। वहाँ मेरे सभी साथियों के मन में यही इच्छा थी कि या तो विदेश चले जाएँ या फिर किसी बड़ी एमएनसी यानी बहुराष्ट्रीय कम्पनी में बढ़िया वेतन वाली नौकरी पा लें- चाहे वहाँ काम उनके क्षेत्र से जुड़ा न भी हो। लेकिन, मेरा सपना तो देश में रहकर रॉकेट और अंतरिक्ष यान बनाने का था। तभी तो मैंने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन-'इसरो' में वैज्ञानिक के पद पर काम करने का विकल्प चुन लिया।

यही मेरे जीवन का अहम मोड़ था। वहाँ मिली शुरूआती उड़ान से मैं भारत के रॉकेट कार्यक्रम के केंद्र तक पहुँच गया तथा भारत के सबसे बड़े रॉकेट के विकास में जुड़ गया। स्टार्टअप इंडिया कार्यक्रम से प्रेरित होकर मैंने अपने इसरो-सहयोगी भरत के साथ मिलकर 2018 में एक प्राइवेट रॉकेट कम्पनी बनाने का फैसला कर लिया हालांकि उस वक्त देश में कोई अंतरिक्ष नीति नहीं थी और 2022 में हमने एक प्राइवेट रॉकेट विकसित करके अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया तथा जल्दी ही भारत का पहला प्राइवेट उपग्रह प्रक्षेपण यान बनाने में सफलता प्राप्त की।

मैं इस पूरी यात्रा को इसलिए याद कर रहा हूँ ताकि स्टार्टअप इंडिया अभियान के बहुआयामी प्रभावों तथा अंतरिक्ष-टेक क्षेत्र में उद्यमियों को सहायता और प्रोत्साहन देने वाली भारत सरकार की प्रगतिशील नीतियों के दूरगामी गुणक प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक किया जा सके।

यह इस बात का पक्का सबूत है कि जब दूरदर्शितापूर्ण नीतियाँ उद्यमशीलता को बढ़ावा देने वाली होती हैं तो सफलता असीम हो जाती है।

भारत जैसे देश में, जहाँ 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 वर्ष से कम आयु की है तथा जिसकी गणना उन प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में होती है जिनकी सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर सबसे तेजी से बढ़ रही है, अवसरों की संख्या तो इतनी हो सकती है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। दस वर्ष पहले माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जब स्टार्टअप इंडिया पहल का शुभारम्भ किया था तब से भारत ने ऐसी ही महान सफलता प्राप्त की है।

इस समय देश में 400 से ज्यादा स्पेस-टेक (अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी) से जुड़े स्टार्टअप हैं। हमारे जैसे कई स्टार्टअप रॉकेटों का निर्माण कर रहे हैं। कुछ स्टार्टअप उपग्रह निर्माण में लगे हैं और कुछ अंतरिक्ष के कचरे के निपटान के समाधान खोजने में लगे हैं। कुछ स्टार्टअप अंतरिक्ष में दोबारा जा सकने वाले यानों का निर्माण कर रहे हैं।

यह क्रांतिकारी बदलाव भारत सरकार की दूरगामी नीतियों का परिणाम है जिनसे विश्व के सबसे तेज़ गति से बढ़ते स्पेस-टेक इकोसिस्टम का विकास सम्भव हो पाया है। स्टार्टअप पहल के आधार पर भारत सरकार ने 2020 में अंतरिक्ष क्षेत्र में प्राइवेट उद्यमियों को भी आने की अनुमति दे दी तथा 2024 में अंतरिक्ष नीति निर्धारित करके भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्रमाणन केंद्र (IN-SPACEe) की स्थापना की जो नियामक संस्था की भूमिका निभाता है। साथ ही, भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र की मदद के लिए 1,000 करोड़ रुपये का वेंचर पूंजी कोष भी शामिल किया गया।

भरोसा ही मुख्य आधार

ये बदलाव सरकार की अनुमति और आर्थिक सहायता से ही नहीं आए हैं, इसकी

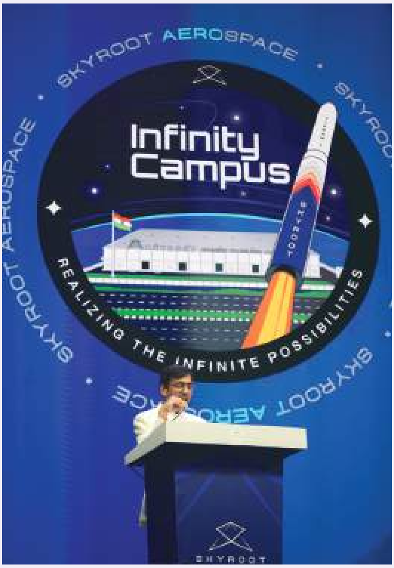

सफलता तो वास्तव में देश के उद्यमियों और इंजीनियरों पर विश्वास करने पर आधारित थी। यह तो समूचे विश्व के लिए संदेश था कि भारत सरकार वाकई कुछ ठोस करना चाहती है और इसलिए भारत के स्पेस-टेक स्टार्टअप्स को भरपूर समर्थन दिया जा रहा है।

प्रक्षेपण यान जैसे अत्यधिक जोखिम वाले क्षेत्रों में आमतौर पर विकास प्रक्रिया सात से दस साल तक चलती है जिससे इन क्षेत्रों में भरोसा होना ज़रूरी होता है

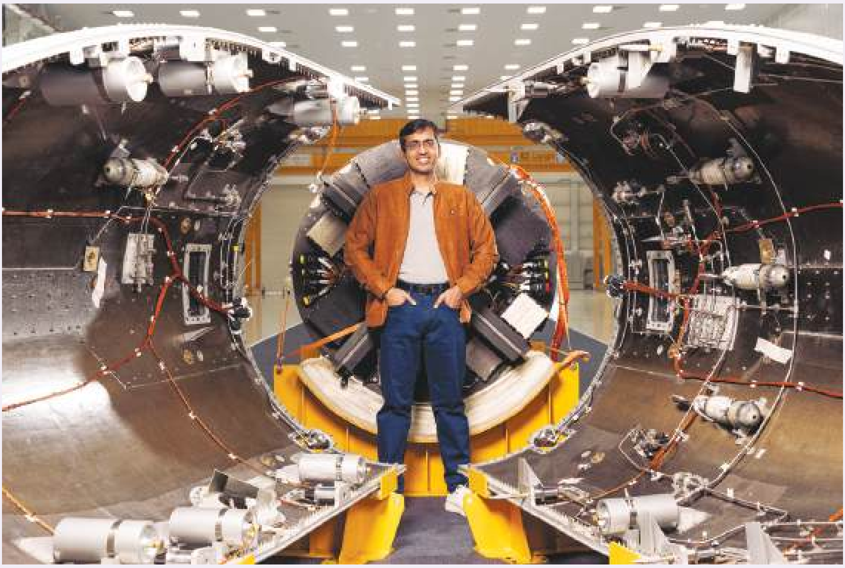

क्योंकि इसी के सहारे शक-संदेह मिटाकर आगे बढ़ा जा सकता है।

जहाँ अन्य देशों में स्टार्टअप्स 'नियामक जोखिम' का कारण बने हुए थे वहीं भारत में इस नियामक व्यवस्था को ही संचालन में सहायक बना लिया गया।

लाइसेंस जारी करने, परीक्षण

सुविधाएँ उपलब्ध कराने और स्टार्टअप लगाने से पहले उसकी कारोबारी क्षमता में विश्वास जमाने के लिए बातचीत करना नीतिगत व्यवस्था से भी ज़्यादा ज़रूरी है। यही विश्वास मन में पूरी तसल्ली पैदा करता है। हैदराबाद स्थित हमारी स्काईरूट एयरोस्पेस कम्पनी ने इस इकोसिस्टम की मदद से कई बड़े बदलाव लाने में कामयाबी हासिल की है। हमने उन एयरोस्पेस इंजीनियरों को आकर्षित किया जो प्राइवेट अंतरिक्ष क्षेत्र में कैरियर बनाना चाहते थे। हमने ऐसे निवेशक खोजे जो लम्बी अवधि वाले डीप-टेक वेंचरों के लिए निवेश करने को तैयार थे। हम इसरो की परीक्षण सुविधाओं तक पहुँचने में सफल हो गए जिन्हें स्वयं विकसित करने में अरबों रुपये और कई दशकों का समय लगता। सबसे सुखद तो यह था कि हमें हर चरण पर नियामक स्वीकृति मिलती चली गई।

अंतरराष्ट्रीय उपग्रह ऑपरेटरों या वैश्विक निवेशकों से बात करने पर पता चलता है कि भारत ने अपने स्टार्टअप्स में जो विश्वास रखा, उसी के कारण वैश्विक

कम्पनियाँ भी भारत के स्टार्टअप्स पर भरोसा करती हैं।

सोच में यह बदलाव इसलिए ज़रूरी है क्योंकि अंतरिक्ष मूल रूप से है ही वैश्विक। उपग्रह सीमाओं के पार ऑपरेट करते हैं, प्रक्षेपण यान अंतरराष्ट्रीय समुदायों को सेवाएँ प्रदान करते हैं तथा नई खोज या नवाचार की खोज के लिए महाद्वीपों के बीच भागीदारी की ज़रूरत पड़ती है। भारत को नवाचारों की धुरी के रूप में मान्यता मिलने से ये भागीदारी विशेष कृपा या एहसान नहीं बल्कि आपसी सहमति का रूप ले लेती है।

ऊँची कक्षा

स्टार्टअप इंडिया ने जो विश्वास जमाया, उससे यह सोच तो बदली है कि दुनिया हमारे बारे में क्या सोचती है; साथ ही, यह नज़रिया भी बदला कि हम अपने बारे में क्या सोचते हैं।

इन बदलावों का असर देश के कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में भी देखा जा रहा है। इंजीनियरिंग ग्रेजुएट उद्यमशीलता को असल विकल्प मानने लगे हैं। ये रॉकेटों के इंजन और उपग्रह प्रणालियाँ विकसित कर रहे हैं क्योंकि भारत ने नीतिगत, पूंजीगत और संस्थात्मक सहयोग का वायदा करके उनकी महत्वाकांक्षा पूरी करने का संकल्प लिया है। वे पूरी हिम्मत और ताकत से भविष्य के निर्माण में लगे हैं क्योंकि वे जानते हैं कि भारत उनमें ही अपना भविष्य देख रहा है।

स्टार्टअप इंडिया के आगामी दशक में यही नींव रखी जाएगी। एक वर्ष में पचास रॉकेट लॉन्च करने हों या उच्चतम क्वालिटी के सेमीकंडक्टर बनाने हों, डीप-टेक सेक्टरों की टाइमलाइन सॉफ्टवेयर क्षेत्र से अलग रहती है और कई साल की होती है तथा पूंजीगत आवश्यकताएँ भी अलग तरीके से आँकी जाती हैं।

यह इकोसिस्टम इस सच्चाई के

SKYROOT AEROSPACE

हिसाब से बदलने लगा है। लम्बी अवधि वाले उद्यमों के लिए पूँजी लगाने वालों को संयम रखना पड़ता है। भारत सरकार बाज़ार को विकसित होने में मदद जारी रखे हुए हैं, पृथ्वी के अध्ययन के लिए भारत में ही निर्मित तारामंडल बनाने के लिए उपग्रह स्टार्टअप्स का कंसोर्टियम स्थापित करने का हाल में दिया आदेश इसका स्पष्ट उदाहरण है।

बाज़ार तैयार करने के ऐसे प्रयास जारी रहने चाहिए।

नासा के कर्मिशयल कार्गो और क्रू कार्यक्रमों ने अमेरिका के स्पेस स्टार्टअप्स को उच्च आकाँक्षा वाले उद्यमों की जगह सक्षम व्यापार बना दिया-स्पेस एक्स और अन्य कार्यक्रमों के लिए धन मिला ही नहीं, उन्हें तो पक्के ग्राहकों और मज़बूत साख का सहारा मिला था। यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी भी इस मॉडल से सीख लेकर एंकर टेनेन्सी प्रोग्रामों के माध्यम से लॉन्च सेवा प्रदाताओं को मदद दे रही है।

ऐसा ही कोई मॉडल भारत के स्पेस स्टार्टअप्स को वैश्विक-स्तर पर बढ़ावा दे सकता है।

स्टार्टअप इंडिया के दूसरे दशक में प्रवेश के साथ ही असल लक्ष्य पुष्टीकरण की जगह विस्तार करना हो गया है। पहले दशक में तो इस बात का जवाब मिल गया कि प्राइवेट अंतरिक्ष उद्यमी भारत में कामयाब हो पाएँगे या नहीं। अगला दशक यह तय करेगा कि भारतीय डीपटेक वैश्विक स्तर पर कितनी प्रभावी हो सकती है।

अब बात शून्य से शुरू करने की नहीं रही बल्कि अब तो एक से अनगिनत तक पहुँचने की है यानी देश में सफलता के बाद वैश्विक नेतृत्व पाने की होड़ लग गई है।

जक्षय शाह
अध्यक्ष
भारतीय गुणवत्ता परिषद्

ज़ीरो डिफ़ेक्ट, ज़ीरो इफ़ेक्ट

'मेड इन इंडिया' ब्रांड को पहुँचाए नई ऊँचाईयों पर

इस वर्ष जनवरी में माननीय प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के 130वें अंक में जब देश को सम्बोधित किया तो उनके शब्दों में ऐसी सशक्त सच्चाई थी जिसे आज हर भारतीय को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, "'चलता है', 'जैसे-तैसे काम चल जाएगा', 'किसी तरह हो जाएगा' का दौर अब ख़त्म हो चुका है।" आज दुनिया भारत से केवल बड़े पैमाने की नहीं बल्कि उत्कृष्टता की अपेक्षा कर रही है।

ये शब्द केवल एक आह्वान न होकर भारत की औद्योगिक चेतना में आया एक मौलिक परिवर्तन दर्शाते हैं। जब हमारा देश 2047 तक 'विकसित भारत' बनने की दहलीज़ पर है तो हमारे सामने प्रश्न एकदम स्पष्ट है– क्या भारतीय उत्पाद मात्रा के लिए जाने जाएँगे या अपनी गुणवत्ता के लिए? अपनी कीमत के लिए या अपने किए वायदे के लिए? केवल आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए या अपेक्षाओं से बेहतर प्रदर्शन के लिए?

इसका उत्तर वह सोच अपनाने में निहित है जिसे माननीय प्रधानमंत्री 2014 से लगातार कहते आ रहे हैं– ज़ीरो डिफ़ेक्ट, ज़ीरो इफ़ेक्ट।

माननीय प्रधानमंत्री का सन्देश स्पष्ट और सुदृढ़ है कि गुणवत्ता केवल सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं हो सकती। यह एक साझा अभियान है जिसमें हमारे आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र के हर हितधारक यानी सरकार, उद्योग जगत, एमएसएमई, स्टार्टअप्स, शैक्षणिक संस्थान और सहयोगी संस्थानों की सामूहिक भागीदारी आवश्यक है।

इस दर्शन को व्यावहारिक रूप देने के लिए, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME मंत्रालय) ने भारतीय गुणवत्ता परिषद् (QCI) के साथ मिलकर एमएसएमई सस्टेनेबल (ZED) प्रमाणन योजना को संस्थागत रूप दिया है। इस योजना के तहत एमएसएमई को एक ऐसा मार्ग उपलब्ध कराया गया है जिससे वे अपनी वर्तमान कार्यक्षमता का आकलन सुधार के अवसरों की पहचान और बेहतरीन तरीक़े अपना कर काँस्य (ब्रॉन्ज़), रजत (सिल्वर) तथा स्वर्ण (गोल्ड) तीन स्तरों पर प्रमाणन प्राप्त कर सकते हैं जो गुणवत्ता, सुरक्षा, संसाधन दक्षता और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व सम्बन्धी क्रमिक उच्च-स्तर हैं।

इससे निश्चय ही परिवर्तन आया है। अब तक 5 लाख से अधिक एमएसएमई इस योजना के तहत पंजीकृत हो चुके हैं, जिससे सिद्ध होता है कि भारत

के औद्योगिक परिदृश्य में गुणवत्ता चेतना व्यापक रूप से अपनायी जा रही है। हाल में 1917 प्रमाणित एमएसएमई के मूल्याँकन में उल्लेखनीय परिणाम सामने आए हैं।

स्वर्ण और रजत प्रमाणित उद्यमों के लिएः

- 92% (रजत) और 85% (स्वर्ण) के कार्यस्थल में स्वच्छता और 5S प्रथाओं में सुधार मिला।
- 83% ने आपूर्ति / सुपुर्दगी की विश्वसनीयता में सुधार किया।
- 77% ने ऊर्जा की खपत में मापने योग्य बचत दर्ज की।
- 55% में दोषों में कमी और पुनःकार्य (रीवर्क) में गिरावट देखी गई।
- 72% को नये बाज़ारों तक पहुँच और वित्तपोषण की बेहतर शर्तें मिलीं।
- 43% ने सकल लाभ मार्जिन में सुधार देखा।

यहाँ तक कि काँस्य (ब्रॉन्ज़) प्रमाणित उद्यम भी, जो अपनी गुणवत्ता यात्रा अभी शुरू ही कर रहे हैं, वे भी प्रारम्भिक उपलब्धियाँ दर्ज करने में सफल रहेः

- 68% ने सुरक्षा उपाय सुदृढ़ किए।
- 64% ने स्वच्छता और साफ़-सफाई में सुधार किया।
- 60% ने मानक संचालन प्रक्रियाएँ (SOPs) मज़बूत कीं।
- 52% ने कार्यस्थल दुर्घटनाओं में कमी दर्ज की।
- 46% ने ऑर्डर की डिलीवरी समय-सीमा में सुधार किया।
- 34% ने सकल लाभ मार्जिन में वृद्धि की।

ये आँकड़े वास्तविक बदलाव दर्शाते हैं- वास्तविक व्यवसाय अधिक प्रतिस्पर्धी बन रहे हैं, वास्तविक श्रमिक अधिक सुरक्षित कार्यस्थल अनुभव कर रहे हैं, वास्तविक उद्यमी बड़े बाज़ारों में प्रतिस्पर्धा करने का आत्मविश्वास हासिल कर रहे हैं, और वास्तविक परिवार बेहतर आजीविका का लाभ उठा रहे हैं।

हरियाणा में फ़रीदाबाद का स्वर्ण-प्रमाणित एक मध्यम उद्यम नरेश रबर उद्योग ने ठोस लाभ की सूचना दी है। इनमें आन्तरिक अस्वीकृतियों में कमी, ग्राहक शिकायतों में गिरावट, रबर स्क्रैप और काग़ज़ी अपशिष्ट में कमी, तथा बिजली खपत में कमी शामिल हैं—ये सभी बातें सीधे तौर पर लाभ और निरन्तरता में

<table>
<tr><td>विभाग/खण्डः
शॉप फ्लोर एरिया</td><td>थीमः कार्यस्थल सुरक्षा</td><td>प्रक्रिया</td><td>दिनांक
26.05.2025</td></tr>
<tr><td colspan="2">सुधार पूर्व (चित्र)</td><td colspan="2">सुधार उपरान्त (चित्र)</td></tr>
<tr><td colspan="2">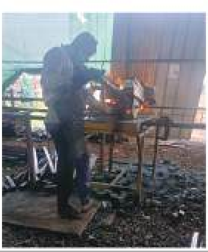</td><td colspan="2"> </td></tr>
<tr><td colspan="2">पहलेः- कार्मिक पीपीई का उपयोग नहीं करते थे और अनेक असुरक्षित और असहज शारीरिक स्थिति में काम करते थे जिससे आहत होने और दक्षता में कमी का जोखिम बढ़ता था। 2 दुर्घटनाएँ हुईं, कारण- काम करने की सही स्थिति की जानकारी न होना।</td><td colspan="2">बाद मेः- जानकारी और प्रशिक्षण सत्र के बाद अब कार्मिक नियमित रूप से पीपीई का उपयोग करते हैं और काम करने की सही शारीरिक स्थिति अपनाते हैं। परिणामः- प्रशिक्षण से असुरक्षित कार्यों में कमी और कार्यस्थल पर सुरक्षा और सही स्थिति होने से छोटी दुर्घटनाओं में कमी।</td></tr>
</table>

योगदान करती हैं।

दिल्ली के रजत-प्रमाणित सूक्ष्म उद्यम एजीऐक्स स्टील (AGX Steel) ने इस प्रमाणन का लाभ उठाते हुए 1 करोड़ रुपये तक की बिना गारंटी (कोलैटरल-फ्री) ओडी/सीसी सीमा प्राप्त की। इसके साथ ही उसे प्रदर्शनी स्टॉल के लिए वित्तीय प्रतिपूर्ति (रीइम्बर्समैण्ट) भी मिली, जिससे यह पहल महत्त्वपूर्ण वित्तीय मदद और बाज़ार तक पहुँच प्रदान करने में अपनी उपयोगिता सिद्ध करती है।

सफलता की ऐसी कहानियाँ पश्चिम बंगाल से महाराष्ट्र और असम से उत्तर प्रदेश तक पूरे भारत में निरन्तर बढ़ रही हैं क्योंकि एमएसएमई यह समझने लगे हैं कि गुणवत्ता में निवेश करने की कोई अतिरिक्त लागत तो नहीं लगती बल्कि प्रतिस्पर्धा ही बढ़ती है।

भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम ही देश में नवाचार का इंजन है। पिछले एक दशक में भारत दुनिया के सबसे बड़े स्टार्टअप इकोसिस्टम्स में से एक के रूप में उभरा है, जहाँ 2 लाख से अधिक सरकारी मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स ने लाखों नौकरियाँ दीं और क्रान्तिकारी समाधानों के माध्यम से पारम्परिक उद्योग बदल दिए।

जब स्टार्टअप्स विचार-आधारित नवाचार से आगे बढ़कर बड़े पैमाने पर उत्पादन की ओर तेज़ी से अग्रसर हों तब 'गुणवत्ता' ही सतत विकास और समय-पूर्व विफल होने के बीच का अंतर बनती है।

यहीं प्रारम्भिक चरण में ज़ेड (ZED यानी ज़ीरो डिफ़ेक्ट ज़ीरो इफ़ेक्ट) का 'क्वालिटी-बाय-डिज़ाइन' सिद्धान्त अपनाने, प्रक्रियाओं का शीघ्र मानकीकरण करने, दस्तावेज़ीकरण की प्रणालियाँ विकसित करने, ट्रेसेबिलिटी तंत्र स्थापित करने और खोट (दोष) की रोकथाम को प्राथमिकता देने वाली संस्कृति निर्मित करने से, भविष्य में विस्तार के दौरान होने वाली विफलताओं, नियमों के अनुपालन की कमी और ग्राहकों के अविश्वास सम्बन्धी जोखिम उल्लेखनीय रूप से कम हो जाते हैं।

माननीय प्रधानमंत्री का विज़न एकदम स्पष्ट है कि भारतीय उत्पाद केवल प्रतिस्पर्धा ही न करें, बल्कि वैश्विक-स्तर पर विश्वास की पहचान बनें। 'मन की बात' में उनके प्रेरक शब्दों पर विचार करते हुए, हम में से प्रत्येक को अपने से यह प्रश्न करना चाहिए कि भारत की गुणवत्ता

विभाग/खण्डः शॉप फ्लोर एरिया	थीमः दैनिक कार्य प्रबन्धन	प्रक्रियाः क्यूसीडी की निगरानी	दिनांक 26.05.2025

सुधार पूर्व (चित्र)	सुधार उपरान्त (चित्र)
पहलेः- शॉप फ्लोर में डिस्पले बोर्ड तो होते थे लेकिन क्यूसीडी (गुणवत्ता, लागत, सुपुर्दगी) ट्रैंड और अपडेट्स की निगरानी नहीं होती थी।	**बाद में:-** शॉप फ्लोर में क्यूसीडी डिस्प्ले बोर्ड लगाये गये हैं जिन पर दैनिक/साप्ताहिक ट्रैंड तथा टीम की जानकारी और ट्रैकिंग के लिए केपीआई देखी जा सकती है। **परिणामः** दोबारा काम करने की दर एवं निम्न गुणवत्ता लागत (सीओपीक्यू) में उल्लेखनीय कमी तथा समग्र डिलीवरी प्रदर्शन में सुधार हुआ। कुल 7% की कमी।

विभाग/खण्डः गुणवत्ता निरीक्षण	थीमः गुणवत्ता	प्रक्रियाः क्यू आई (गुणवत्ता निरीक्षण)
सुधार पूर्व (चित्र)	सुधार उपरान्त (चित्र)	
पहलेः गुणवत्ता से जुड़ी समस्याएँ केवल अस्थायी रूप से ठीक की जाती थीं। बार-बार होने वाले दोषों के लिए बिना जाँच किए श्रमिकों या मशीनों को दोषी ठहरा दिया जाता था। सुधारात्मक कार्रवाइयाँ प्रतिक्रियात्मक थीं, जिसके कारण वही समस्याएँ बार-बार सामने आती रहीं। मूल कारणों की पहचान के लिए कोई संरचित विधि नहीं थी।	**बाद मेंः-** मूल कारण का विश्लेषण करना अब दैनिक समीक्षा का हिस्सा है। कारणों की पहचान के लिए टीमें 5 क्यों (why) या फ़िशबोन रेखाचित्र जैसे साधारण उपाय अपनाती हैं। सुधारात्मक उपाय दर्ज किए जाते हैं और उनकी नियमित निगरानी (ट्रैकिंग) की जाती है। समस्याओं का स्रोत पर समाधान किया जाता है, और पुनरावृत्ति में काफ़ी कमी आयी है। **अप्रैल से अगस्त 2025 तक पुनःकार्य प्रतिशत में 6% कमी आयी।** **गुणवत्ता बढ़ाने से लगभग 35,600 रुपये की बचत।**	

परिवर्तन यात्रा में मेरा योगदान क्या है? अब "चलता है" का दौर समाप्त हो चुका है। "बैस्ट है" का युग शुरू हो गया है। गुणवत्ता से समझौता करने की बजाय उत्कृष्टता और स्वीकार्य से असाधारण की ओर की यात्रा अब प्रारम्भ होती है, यह हम में से हर एक से शुरू होती है और गुणवत्ता के प्रति एक अडिग, समझौता-रहित कटिबद्धता के साथ आगे बढ़ती है।

- **युवा उद्यमियों और स्टार्टअप्स के लिएः** पहले दिन से ही क्वालिटी-बाय-डिज़ाइन अपनाएँ। ज़ैड (ZED) प्रमाणन को केवल अनुपालन की आवश्यकता नहीं बल्कि एक प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त के रूप में देखें।
- **एमएसएमई के लिएः** सतत सुधार अपनाएँ। प्रक्रिया उन्नयन, कौशल विकास और निरन्तरता से जुड़ी प्रथाओं में निवेश करें।
- **बड़े उद्यमों के लिएः** अपने आपूर्तिकर्ता इकोसिस्टम का मार्गदर्शन करें। सर्वोत्तम प्रथाएँ साझा करें और गुणवत्ता उत्कृष्टता को ख़रीद प्रक्रियाओं का एक प्रमुख मानदंड बनाएँ।
- **संस्थानों और नीति-निर्माताओं के लिएः** गुणवत्ता अवसंरचना, प्रमाणन प्रणालियाँ, परीक्षण सुविधाएँ और क्षमता निर्माण मंच मज़बूत करें। गुणवत्ता को हर छोटे-बड़े उद्यम के लिए सुलभ, किफ़ायती और आकांक्षात्मक बनाएँ।
- **और भारत के हर नागरिक के लिएः** आप जिन चीज़ों का उपभोग करते हैं, उनमें गुणवत्ता की माँग करें, जिन चीज़ों का उपयोग करें उनमें गुणवत्ता देखें और सराहें, और आप जो भी काम करें वो गुणवत्ता में सर्वोत्तम हो।

आइए, 2026 को हम एक ऐसा वर्ष बनाएँ जिसमें 'गुणवत्ता' वास्तव में भारत की 'पहचान' बन जाए। आइए, "ज़ीरो डिफ़ेक्ट ज़ीरो इफ़ेक्ट" को किसी दूर के आदर्श के बजाय अपनी दैनिक कार्य-संस्कृति का हिस्सा बनाएँ। आइए, माननीय प्रधानमंत्री का यह विज़न साकार करें, जिसमें मेड इन इंडिया एक भरोसेमन्द, सम्मानित और वैश्विक रूप से प्रशंसित ब्रांड के रूप में स्थापित हो– एक ऐसी उपलब्धि जिस पर हर भारतीय गर्व कर सके। क्योंकि जब 'गुणवत्ता' हमारा सामूहिक मंत्र बन जाती है तब 'विकसित भारत' केवल एक सपना नहीं अपितु एक 'अपरिहार्य गन्तव्य' बन जाता है।

तमसा से अनंतपुर तक

हमारे इकोसिस्टम की संजीवनी का पुनरुद्धार

'जल ही जीवन है', यह हम ज़माने से सुनते आ रहे हैं। लेकिन जब नदियाँ सूखने लगती हैं और तालाब बंजर ज़मीन में बदलने लगते हैं, तो सिर्फ़ पानी ही नहीं सूखता, बल्कि आशाएं भी दम तोड़ने लगती हैं। लेकिन भारत के दो अलग–अलग कोनों, उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ और आंध्र प्रदेश के अनंतपुर में लोगों ने यह साबित कर दिया है कि अगर इरादे मज़बूत हों तो सूखती नदियों और तालाबों में भी फिर से जान फूंकी जा सकती है। यह कहानी 'जन–भागीदारी' की उस भावना की है, जिसने असम्भव लगने वाले काम को भी सम्भव कर दिखाया है।

आज़मगढ़ः जब नदी बनी 'माँ'

उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ में बहने वाली तमसा नदी एक समय अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही थी। गंदगी, अतिक्रमण और लोगों की बेरुख़ी ने इसे लगभग नाले में बदल दिया था। लेकिन फिर शहर के जागरूक लोगों ने ठाना कि बस अब बहुत हो चुका।

आज़मगढ़ के शिक्षाविद् और समाजसेवी डॉ. पवन कुमार बताते हैं कि इस बदलाव

की शुरुआत किसी सरकारी आदेश से नहीं, बल्कि एक एहसास से हुई। वे कहते हैंः

"तमसा के तपस्वियों ने तमसा को केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि माँ तमसा के रूप में उसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व को जनमानस के सामने रखा। जनसंवाद, कार्यशालाओं... ने यह भाव जागृत किया कि नदी का संरक्षण आत्मसंरक्षण है।"

यह अभियान धीरे-धीरे एक जन-आंदोलन बन गया। सबसे बड़ी चुनौती थी लोगों की सोच बदलना और प्रशासन के साथ तालमेल बिठाना। डॉ. पवन चुनौतियों का ज़िक्र करते हुए कहते हैंः

"नदी से प्रदूषण और अपशिष्ट हटाने के दौरान... सबसे बड़ी चुनौती... प्रशासनिक-सामुदायिक समन्वय... और जन-मानस की प्रारम्भिक उदासीनता के रूप में सामने आती है... (लेकिन) साझा संकल्प और सहभागिता से कठिनाइयों को अवसर में बदला जा सकता है।"

इस अभियान में बच्चों से लेकर बुज़ुर्गों तक, सब ने अपना योगदान दिया। युवाओं ने श्रमदान किया तो बुज़ुर्गों ने अपने अनुभव साझा किए। डॉ. पवन इस बदलाव को एक 'जनक्रांति' मानते हैंः

"विभिन्न आयु वर्ग और व्यवसायों के स्थानीय लोगों की भागीदारी ने तमसा नदी के पुनरुद्धार को एक अभियान से जनआंदोलन में बदल दिया... जनक्रांति से ही जलक्रांति आएगी... सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह रहा है कि तमसा एक बार

फिर सामुदायिक एकता और सांस्कृतिक जुड़ाव का केंद्र बन रही है।"

इस जन आंदोलन को प्रभावशाली बनाने में ज़िला प्रशासन ने भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। प्रशासन ने न केवल लोगों को जागरूक किया बल्कि उन्हें एक मंच पर लाने का भी काम किया। आज़मगढ़ के ज़िलाधिकारी रविंद्र कुमार बताते हैं कि कैसे प्रशासन ने इस भावनात्मक जुड़ाव को एक व्यवस्थित रूप दियाः

"यह नदी (तमसा) जनपद आज़मगढ़ में 89 किलोमीटर का सफ़र तय करती है और 111 ग्राम पंचायतों से होकर गुज़रती है। ज़िला प्रशासन ने आम लोगों का ध्यान इस बात पर खींचा कि जब आपका जीवन जल से इतना जुड़ा है, तो आप पानी को गंदा क्यों होने दे रहे हैं?"

वे आगे बताते हैं कि कैसे उन्होंने ज़िम्मेदार लोगों को इसमें शामिल कियाः

"इसी बात को केंद्र में रखकर हमने

नदी के किनारे बसे 111 गाँवों के प्रधानों, सचिवों और अन्य कर्मचारियों के साथ वर्कशॉप की। लोगों से अपील की गई कि साफ़ जल न सिर्फ़ देखने में अच्छा लगेगा, बल्कि यह आपके स्वास्थ्य के लिए भी ज़रूरी है। इस मुहिम का नतीजा है कि आज यह नदी साफ़ हो गई है।"

अनंतपुर में खिलता जीवन

आंध्र प्रदेश के अनंतपुर ज़िले में जैसलमेर के बाद सबसे कम बारिश होती है। यहाँ पानी की क़िल्लत इतनी ज़्यादा थी कि लोग अपना घर-बार छोड़ने को मजबूर थे। लेकिन यहाँ के युवाओं ने तक़दीर के भरोसे बैठने के बजाय ख़ुद कुदाल उठाने का फैसला किया।

अनंतपुर के निवासी बिसाथी भरत बताते हैं कि कैसे 'अनंत नीरू संरक्षण' प्रोजेक्ट ने तस्वीर बदल दी। वे कहते हैंः

"पानी यहाँ की सबसे बड़ी समस्या है... बार-बार सूखा और अनिश्चित आजीविका... इसलिए, कुछ साल पहले अनंतपुर के लोगों ने एक शपथ ली और जन-भागीदारी आंदोलन चलाया... इस प्रोजेक्ट के तहत, लोगों ने किसी से किसी चीज़ की उम्मीद किए बिना... पुराने पारम्परिक जलाशयों को फिर से जीवित करना शुरू किया।"

यहाँ के लोगों ने, जिनमें किसान और मज़दूर शामिल थे, ख़ुद तालाबों को साफ़ किया, चेक डैम बनाए और 7000 से ज़्यादा पेड़ लगाए। नतीजा यह हुआ कि जो इलाक़ा कभी वीरान था, आज वहाँ प्रकृति मुस्कुरा रही है। भरत ख़ुशी से बताते हैंः

"आज हम एक अद्भुत इकोसिस्टम देख सकते हैं जहाँ प्रकृति लोगों से मिलती है... यहाँ के जानवर और वन्यजीव, जो पहले ग़ायब हो गए थे, अब वापस आ रहे हैं... भूजल स्तर बढ़ने के कारण आज किसानों को अच्छी पैदावार मिल रही है।"

यह प्रोजेक्ट सिर्फ़ पानी बचाने के बारे में नहीं था, बल्कि यह लोगों के हक़ और स्वाभिमान की लड़ाई थी। जैसा कि भरत कहते हैं:

"यह ऊपर से थोपा गया प्रोजेक्ट नहीं है, यह लोगों का आंदोलन है। यह ज़मीनी-स्तर पर समुदाय द्वारा चलाया गया प्रोजेक्ट है। इसलिए, यहाँ लोग जलाशयों के रक्षक और जल संरक्षण के एंबेसडर बन गए हैं।"

चाहे आज़मगढ़ की तमसा हो या अनंतपुर के जलाशय, दोनों जगह एक बात समान है- इच्छा शक्ति। जब समाज जागता है, तो सूखती नदियाँ भी बहने लगती हैं। डॉ. पवन कुमार का यह संदेश पूरे भारत के लिए एक सबक़ है:

"भारत भर के समुदायों के लिए मेरा संदेश यही है कि नदी का पुनरुद्धार योजना से पहले भावना से शुरू होता है। जब नदी को केवल जलस्रोत नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति, आस्था और भविष्य के रूप में देखा जाता है, तब जन भागीदारी स्वतः जागृत होती है... समाज, नागरिक और प्रशासन जब एक लक्ष्य के लिए साथ चलते हैं, तब हर नदी फिर से जीवित हो सकती है।"

तमसा से लेकर अनंतपुर तक की यह यात्रा हमें बताती है कि अगर हम अपनी विरासत और पर्यावरण को बचाने का ज़िम्मा ख़ुद उठा लें, तो आने वाली पीढ़ियों को हम एक हरा-भरा और ख़ुशहाल कल दे सकते हैं।

‘भजन क्लबिंग’ का उदय

नए सुरों में भक्ति का रंग

“भजन और कीर्तन सदियों से हमारी संस्कृति की आत्मा रहे हैं। आज की पीढ़ी ने भक्ति को अपने अनुभव और जीवनशैली में ढाल दिया है।” माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'मन की बात' कार्यक्रम में कहे गए ये शब्द भारत में आ रहे एक बड़े सांस्कृतिक बदलाव की ओर इशारा करते हैं। जहाँ एक ओर दुनिया तकनीक और आधुनिकता की रेस में सरपट दौड़ रही है, वहीं भारत के युवा अपनी जड़ों की ओर लौटने के नए और अनूठे रास्ते खोज रहे हैं। ऐसे ही एक नए चलन का नाम है– ‘भजन क्लबिंग’।

जब आप इन आयोजनों में पहुँचते हैं तो एक अद्भुत नज़ारा होता है। चकाचौंध रोशनी, शानदार मंच और संगीत का ताम-झाम किसी रॉक कॉन्सर्ट जैसा होता है, लेकिन हवाओं में कबीर के दोहे और मीरा के पद गूँजते हैं। यह

'लय' और 'लगन' का एक अनूठा संगम है।

आधुनिक मंच, सनातन संस्कार

प्रधानमंत्री जी ने इस बात पर विशेष ज़ोर दिया कि यह 'भजन क्लबिंग' केवल मनोरंजन नहीं है। इसमें भजनों की गरिमा का पूरा ध्यान रखा जाता है। यह भक्ति का वह स्वरूप है जहाँ वाद्ययंत्र आधुनिक हो सकते हैं, लय में नयापन हो सकता है, लेकिन शब्दों की मर्यादा और भाव की गहराई में वही 'सनातन आत्मा' प्रवाहित है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो इस बात का प्रमाण हैं कि आज के युवा अध्यात्म के निरंतर प्रवाह को एक नए रंग में अनुभव कर रहे हैं।

इस मुहिम को नई ऊँचाइयों पर ले जाने वाले युवाओं में शामिल हैं 'बैकस्टेज सिब्लिंग्स' के राघव और प्राची। वे आज के युवाओं को उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का एक पुल बन गए हैं।

अक्सर यह कहा जाता है कि नई

पीढ़ी (Gen-Z) अपनी परम्पराओं से दूर हो रही है। लेकिन 'भजन क्लबिंग' के आँकड़े कुछ और ही कहानी बयान करते हैं। 'बैकस्टेज सिब्लिंग्स' के राघव बताते हैं:

"हमारे कॉन्सर्ट में आने वाले 85 प्रतिशत लोग 18 से 28 आयु वर्ग के हैं। जेन-ज़ी (Gen-Z) इसे बहुत पसंद कर रही है। युवाओं को यह ख़ूब भा रहा है और वे अपनी जड़ों की ओर लौट रहे हैं। हमारे देश की संस्कृति और कला हमेशा से समृद्ध रही है। 'भजन क्लबिंग' के माध्यम से हम लोगों को फिर से इसका महत्त्व समझा रहे हैं। लोग समझ रहे हैं कि हमारी जड़ें कितनी गहरी हैं और भजनों के माध्यम से हमें कितना सुख और कितनी शांति मिलती है, कितना कुछ सीखने को मिलता है।"

यह बदलाव दर्शाता है कि आध्यात्मिक शांति की तलाश अब केवल वृद्धावस्था तक सीमित नहीं रह गई है। आज के युवा अब उन जगहों को भी प्राथमिकता दे रहे हैं जहाँ वे

सुकून से बैठकर अपनी 'आत्मा' से 'संवाद' कर सकें।

पीढ़ीगत दूरियों को मिटाता संगीत

'भजन क्लबिंग' की सबसे बड़ी खूबसूरती इसकी समावेशिता है। इन भजन संध्याओं में पीढ़ियों का मिलन होता है। यह एक पारिवारिक उत्सव है जहाँ दादी और पोता एक ही धुन पर झूमते नज़र आते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने सही ही कहा है कि भक्ति को हल्केपन में नहीं लिया जा रहा है। मंच बदल गया है, लेकिन मूल भावना वही है। 'भजन क्लबिंग' महज़ एक ट्रेंड नहीं, बल्कि एक 'आध्यात्मिक पुनर्जागरण' है। यह इस बात का प्रतीक है कि भारत का युवा कितना भी आधुनिक क्यों न हो जाए, उसके पैर अपनी संस्कृति की ज़मीन पर ही टिके रहेंगे। तन्मयता, लगन और लय के साथ जब हज़ारों युवा एक स्वर में गाते हैं, तो वह केवल गायन नहीं होता, बल्कि एक नए और सशक्त भारत का उद्घोष होता है।

‘मन की बात’ से गणतंत्र दिवस समारोह तक

देश के प्रेरणादायक नागरिकों का सम्मान

जब माननीय प्रधानमंत्री ‘मन की बात’ में किसी नागरिक के बारे में चर्चा करते हैं, तो यह ‘राष्ट्रीय पहचान’ का पल बन जाता है। अलग-अलग एपिसोड में दिखाए गए कई ज़मीनी बदलाव लाने वालों के लिए यह पहचान ब्रॉडकास्ट से भी आगे बढ़ गई, क्योंकि उन्हें गणतंत्र दिवस समारोह में विशेष अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण, रेलवे, और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव और सूचना एवं प्रसारण तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन के साथ उनकी बातचीत में सब को साथ लेकर चलने वाले शासन की भावना दिखी, जहाँ जो ज़मीनी-स्तर पर चुपचाप काम कर रहे हैं, उन्हें राष्ट्रीय उत्सव के केंद्र में लाया जाता है।

“यह एक शानदार अनुभव रहा है। सरकार के मंत्री ज़मीन से जुड़े हुए हैं। वास्तव में हमें इस तरह के समावेशन की जरूरत है। मोदी जी की सरकार ने ऐसा ही किया है। मैं

बहुत खुश हूँ क्योंकि अपने स्पोर्ट्स कॅरियर के पिछले 33 सालों में मैंने अब तक 32 अंतरराष्ट्रीय मेडल जीते हैं, लेकिन इस बार ही मुझे भारत सरकार से अच्छी तारीफ मिली। मैं मंत्रालय, वैष्णव जी, दूरदर्शन और आकाशवाणी का दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ।”

-जॉबी मैथ्यू, केरल (मन की बात के 120वें संस्करण में चर्चा)

"इस बार मैंने गणतंत्र दिवस की परेड देखी। परेड देखना मेरा बहुत बड़ा सपना था। लगभग ग्राउंड ज़ीरो से आए लोगों को मौका नहीं मिलता, लेकिन इस सरकार ने पद्म श्री को सामान्य जनमानस का पद्म बना दिया है। मोदी जी ने हमें राष्ट्रीय समारोह का हिस्सा बनने का मौका दिया है। यह एक स्पष्ट संदेश है कि जब ज़मीनी-स्तर के लोग इन राष्ट्रीय उत्सव और अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम में आते हैं, तो इसका मतलब है कि लोगों की बात सुनी जा रही है, उनकी परवाह की जा रही है, और उनके बारे में सोचा जा रहा है। मैं सूचना और प्रसारण मंत्रालय के दो केंद्रीय मंत्रियों – श्री अश्विनी वैष्णव जी और डॉ. एल. मुरुगन सर से भी मिला। वे हमारे बहुत करीब थे, और उन्होंने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया, हमारी बात सुनी, और हमारे साथ अच्छी बातचीत की। हमने उनके साथ सब कुछ ऐसे शेयर किया जैसे हम मिनिस्टर से नहीं, बल्कि उन लोगों से बात कर रहे हों जो हमारी परवाह कर रहे हैं।"

-जावेद अहमद टाक, जम्मू-कश्मीर

(मन की बात के 14वें संस्करण में चर्चा)

“मैंने पैठनी साड़ी बुनने की कला सीखी और 300 महिलाओं को प्रशिक्षित किया। मैंने उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने में मदद की, जिनके बारे में उन्हें पता नहीं था। इस योगदान की वजह से, ‘मन की बात’ में मेरा नाम आया, जो मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने यह काम इसलिए किया ताकि बुनकरों को वह मिल सके, जिसके वे हकदार हैं। लेकिन मुझे कभी अंदाज़ा नहीं था कि

इतने छोटे से काम से मुझे मोदी जी से इतनी बड़ी पहचान मिलेगी। यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि मोदी जी छोटे बुनकरों और कारीगरों को भी बराबर महत्व देते हैं।”

- कविता धावले, महाराष्ट्र

(मन की बात के 124वें संस्करण में चर्चा)

"हम *'ज़ीरो वेस्ट मैनेजमेंट'* करते हैं। केले की कटाई के बाद, हम केले के तने का इस्तेमाल फाइबर बनाने और उस फाइबर से हैंडीक्राफ्ट बनाने के लिए करते हैं; और खाने वाले हिस्सों से हम पापड़, अचार वगैरह बनाते हैं। 'मन की बात' में ज़िक्र होना एक बहुत अच्छा अनुभव था। लेकिन मुझे यह जानकर हैरानी हुई कि मोदी सर ने अपने एपिसोड में मेरा नाम लिया है। यह मेरे लिए बहुत अच्छा पल था। केंद्रीय मंत्रियों से मिलने के बाद मुझे बहुत खुशी हुई। ऐसे कार्यक्रमों से जागरूकता बढ़ती है, क्योंकि जब मैंने शुरू किया था, तो लोग मेरे काम के बारे में कुछ नहीं जानते थे, लेकिन अब मैं जहाँ भी जाता हूँ, लोग मुझे पहचानते हैं।"

- वर्षा, कर्नाटक

(मन की बात के 107वें संस्करण में चर्चा)

ये प्रेरणादायक नागरिक एक ऐसे देश की भावना को दिखाते हैं जो अपने लोगों की बात सुनता है, उन्हें पहचानता है और उनका जश्न मनाता है। 'मन की बात' से लेकर 'गणतंत्र दिवस' परेड तक का उनका सफ़र एक गहरे विचार को दिखाता है: हर सच्ची कोशिश मायने रखती है, और हर ज़मीनी गाथा एक राष्ट्रीय मंच की हकदार है।

महान भारतीय परिवार

एकता और वैश्विक प्रेरणा की परम्परा

भारत एक देश के तौर पर दुनिया भर में अपने भाई-चारे और मानवीय मूल्यों के लिए जाना जाता है और उसका सम्मान किया जाता है। पूरी दुनिया के बारे में हमारी समझ 'वसुधैव कुटुम्बकम' के तौर पर है। यह बात मानवता के इतिहास में दर्ज कई उदाहरणों से स्पष्ट होती है। यह समझ भारत की सदियों पुरानी समृद्ध संस्कृति और पारिवारिक मूल्यों की परम्परा से आती है। ये मूल्य बताते हैं कि परिवार केवल कुछ सदस्यों का समूह नहीं है, जहाँ खून का रिश्ता है और एक ही

छत के नीचे रहते हैं, बल्कि इसमें घर की दीवारों के बाहर आसपास के सभी लोग शामिल होते हैं। 'परिवार' की इस अवधारणा के जीते-जागते उदाहरण तब सामने आते हैं जब गुजरात के एक गाँव में, सभी गाँव वाले, चाहे उनकी संख्या कितनी भी हो, हर दिन एक ही जगह पर, एक परिवार की तरह, एक साथ खाना बनाने, परोसने और खाने का फैसला करते हैं; जब जम्मू-कश्मीर का एक नौजवान अपने पूरे गाँव को नशा-मुक्त बनाने का संकल्प लेता है; जब पश्चिम बंगाल में एक संगठन, बच्चों और बुज़ुर्गों की देखभाल की ज़िम्मेदारी पूरी लगन से लेता है। माननीय प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में अविश्वसनीय भारतीय पारिवारिक प्रणाली पर चर्चा करते हुए इन कोशिशों की बहुत तारीफ़ की है।

गुजरात के जिस गाँव का ऊपर ज़िक्र किया गया है, उसका नाम चंदनकी है। इस गाँव में पिछले 15 सालों से लगातार पूरे गाँव के लिए खाना बन रहा है। गाँव के सरपंच श्री पूनम चुन्नीलाल पटेल बताते हैं कि 'कम्युनिटी किचन' का यह आइडिया तब आया, जब यह महसूस हुआ कि गाँव से बहुत से नौजवान काम करने के लिए शहरों में चले गए, और जो बुज़ुर्ग पीछे रह गए, उन्हें अपने लिए खाना बनाने के लिए किराने का सामान, सब्जियाँ और दूसरी चीज़ों का प्रबंध करने में बहुत परेशानी होती थी। यहाँ तक कि जब गाँव के नौजवान दिवाली जैसे अलग-अलग त्योहारों पर वापस आते हैं, तो वे अपने घरों में खाना नहीं बनाते, बल्कि वे किचन की ज़िम्मेदारी लेते हैं और पूरे गाँव के लिए खाना बनाते हैं।

वे कहते हैं, "आपको दुनिया में कहीं भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलेगा जहाँ पूरा गाँव साल के 365 दिन एक ही जगह पर एक साथ खाना खाता हो, चाहे संख्या 500 हो या 600।" खाना पूरी साफ-सफाई के साथ पकाया जाता है, और डिश बुज़ुर्गों की सेहत की ज़रूरतों और पसंद को ध्यान में रखकर तैयार की जाती हैं।

माननीय प्रधानमंत्री ने एक और कोशिश के बारे में चर्चा की। वह जम्मू-कश्मीर के

अनंतनाग ज़िले के शेखगुंड गाँव के रहने वाले श्री मीर जाफर की है। जब उन्होंने अपने गाँव के युवाओं को तम्बाकू, शराब और मादक पदार्थों की की लत में पड़ते देखा, तो उन्होंने गाँव के सभी लोगों को अपना परिवार समझा और उन्हें गाँव को नशा–मुक्त बनाने के इस काम में साथ देने के लिए मनाया।

वे कहते हैं, "यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम शराब पर बैन न लगाने के लिए सरकार को दोषी ठहराते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। फर्क इस बात से पड़ता है कि हम नागरिक के तौर पर क्या कर रहे है? पुलिस और सेना अपना काम कर रही हैं, लेकिन क्या मैं एक नागरिक के तौर पर अपनी ज़िम्मेदारियाँ निभा रहा हूँ? मेरा मानना है कि अगर कोई इंसान अपनी सोच बदलता है, तो समाज खुद बदल जाता है।" वे बताते हैं कि उनके पिता खुद एक सैनिक थे, जिन्हें देश के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा उनकी सफल कोशिशों को पहचान मिलने पर बहुत गर्व होता।

संस्कृत में एक मशहूर कहावत है – 'सेवा परमो धर्म', जिसका मतलब है 'सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है'। स्वामी विवेकानंद के विचारों और आदर्शों से प्रेरित होकर, पश्चिम बंगाल के पूर्व मेदिनीपुर ज़िले के फरीदपुर में मौजूद एक संस्था विवेकानंद लोकशिक्षा निकेतन इस कहावत का मतलब सही साबित करती है।

भारत सरकार के अलग–अलग मंत्रालयों के समर्थन से, यह 'मिशन वात्सल्य' के तहत मेंटली चैलेंज्ड लड़कों के लिए एक होम, एक विशेष आश्रय एजेंसी, और कमज़ोर एवं निराश्रित बच्चों के लिए एक ओपन शेल्टर चलाता है। यह बुज़ुर्ग महिलाओं के लिए एक ओल्ड एज होम भी चलाता है, जहाँ उन्हें रहने की जगह, काउंसलिंग और अच्छी देखभाल मिलती है; और हिंसा तथा सामाजिक प्रताड़नाओं से परेशान महिलाओं के पुनर्वास और सशक्तीकरण के लिए शक्ति सदन को मैनेज करता है। संगठन के महासचिव श्री गौतम कुमार शसमल बताते हैं, "इन सभी अलग–अलग क्रियाकलापों के माध्यम से, हमारा आगे का लक्ष्य मानव संसाधन का इस्तेमाल करके हर तरह की सामाजिक असमानता और महिला–पुरुष भेदभाव को दूर करना, ज़रूरतमंद लोगों के साथ खड़े होना, दिव्यांग लोगों की मदद करना और उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाना है। कुल मिलाकर, हमारा मकसद है

कि हर बच्चा, महिला और दिव्यांग व्यक्ति हमारे संगठन के माध्यम से समाज का एक अहम सदस्य बन सके। यही हमारा मिशन है।"

इन प्रेरक कहानियों में एक ऐसे गाँव से जो एक परिवार की तरह साथ में खाना खाता है, एक ऐसे नौजवान तक जो अपनी कम्युनिटी को बदल देता है, एक ऐसी संस्था तक जो बच्चों, महिलाओं और बुज़ुर्गों की देखभाल के लिए समर्पित है – हम समाज के लिए बिना किसी स्वार्थ के सेवा करने के भारत के हमेशा रहने वाले आदर्श की जीती-जागती भावना देखते हैं। भारतीय परिवार पद्धति केवल खून के रिश्तों तक ही सीमित नहीं है, यह बड़े पैमाने पर समाज तक फैला हुआ है, जो ज़िम्मेदारी, दया और मिल कर आगे बढ़ने को बढ़ावा देता है। एकता और सेवा की यह सदा-सर्वदा रहने वाली संस्कृति ही भारत को केवल एक देश ही नहीं, बल्कि एक 'परिवार' और दुनिया के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में निरंतर कायम रखती है।

सरहदों के पार

अपनी जड़ों को सींचता भारतीय समुदाय

कल्पना कीजिए कि आप भारत से हज़ारों मील दूर किसी दूसरे देश में हों, लेकिन वहाँ का वातावरण और सांस्कृतिक परिदृश्य आपको अपने घर जैसा एहसास दिलाए! मलेशिया में बसने वाला भारतीय समुदाय कुछ ऐसा ही करिश्मा कर रहा है। वे न सिर्फ़ अपनी प्रगति की राह बना रहे हैं, बल्कि अपनी विरासत को भी पूरी शिद्दत के साथ संजोए हुए हैं। इस कोशिश में 'मलेशिया–इंडिया हेरिटेज सोसाइटी' एक मज़बूत स्तम्भ बनकर उभरी है, जिसके संस्थापक–अध्यक्ष श्री प्रभाकरन नायर हैं।

श्री नायर का मानना है कि विरासत को सहेजना सिर्फ़ पुरानी यादों में जीना नहीं है, बल्कि यह दो देशों के बीच गहरा और बौद्धिक रिश्ता बनाने की एक कोशिश है।

इंसानियत की रूहानी विरासत

इस सोसाइटी की शुरुआत सिर्फ़ सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए नहीं हुई थी, बल्कि इसके पीछे एक बहुत बड़ी सोच थी। श्री प्रभाकरन नायर बताते हैं कि उनका शुरुआती मक़सद यूनेस्को (UNESCO) में एक नई श्रेणी बनवाना था– 'मानवता की आध्यात्मिक विरासत' (Spiritual Heritage of Mankind)। अपनी प्रेरणा के बारे में बताते हुए वे कहते हैं:

"शुरुआत में हमारा मुख्य उद्देश्य यूनेस्को के भीतर एक नई श्रेणी की वकालत करना था... हमारा मानना था कि 'सांस्कृतिक' और 'निर्मित' विरासत के साथ-साथ, दुनिया को उन मूर्त और अमूर्त आध्यात्मिक परम्पराओं को भी पहचानना चाहिए जो पूरी मानवता की हैं।"

हालाँकि, बाद में उन्होंने अपनी ऊर्जा को 'सांस्कृतिक कूटनीति' की ओर मोड़ा और भारत-मलेशिया के साझा इतिहास को दस्तावेज़ करने का बीड़ा उठाया।

भाषाः दिलों को जोड़ने का माध्यम

भाषा किसी भी संस्कृति की पहचान होती है। मलेशिया में भारतीय समुदाय सिर्फ़ भाषा को ही नहीं, बल्कि उस भाषायी विरासत को संरक्षित कर रहा है जो सदियों से चली आ रही है। श्री नायर का नज़रिया इस मामले में बहुत स्पष्ट है। वे कहते हैंः

"हमारा मानना है कि भाषा को विवाद का स्रोत बनने के बजाय समझ का एक माध्यम बनना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए सोसायटी किसी भी ध्रुवीकरण के बिना भाषायी विरासत की व्यापक सराहना को बढ़ावा देती है।"

इसी सोच के तहत सोसाइटी ने 2025 में 'द हिंदू ग्रुप' की निर्मला लक्ष्मण के साथ मिलकर एक विशेष आयोजन किया, जो मलेशियाई तमिल डायस्पोरा की भाषायी विरासत का जश्न था। इसके अलावा, वे संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं के महत्व को भी लोगों तक पहुँचा रहे हैं।

कला और संगीतः जहाँ सरहदें मिट जाती हैं

संगीत और सिनेमा, ये दो ऐसे जादुई माध्यम हैं जो बिना किसी वीज़ा के दिलों में उतर जाते हैं। श्री नायर बताते हैं कि

उनकी सोसायटी कला के माध्यम से लोगों को जोड़ने का प्रयास करती है। वे 1960 की क्लासिक फिल्म 'सिंगापुर' की स्क्रीनिंग जैसे आयोजनों का ज़िक्र करते हैं, जो दोनों देशों के रिश्तों की गवाह हैं। संगीत के बारे में अपनी योजनाओं को साझा करते हुए वे कहते हैं:

"हम एक प्रमुख 'म्यूज़िकल मीटिंग पॉइंट' कॉन्सर्ट की योजना बना रहे हैं। यह पहल मलय और चीनी संस्करणों के साथ प्रतिष्ठित भारतीय गीतों को उजागर करेगी, जो एक सामंजस्यपूर्ण संश्लेषण (Harmonious Synthesis) को प्रदर्शित करेगी।"

यह कोशिश साबित करती है कि नागरिकता भले ही अलग हो लेकिन दिलों की धड़कन और संगीत के सुर एक ही हैं।

विरासत की सैर

मलेशिया की ज़मीन पर भारत के इतिहास के कई निशान मौजूद हैं। 'हेरिटेज वॉक' के ज़रिए श्री नायर और उनकी टीम इन निशानों को तलाश कर रही है। हर उस चीज़ को दस्तावेज़ किया जा रहा है जो भारत और मलेशिया को जोड़ती है। श्री नायर इसे 'जीवंत इतिहास'' कहते हैं। उनका मक़सद है कि जब कोई भारतीय पर्यटक मलेशिया आए तो उसे वहाँ अपनापन और अपने पूर्वजों की झलक दिखाई दे।

मलेशिया में भारतीय समुदाय का यह प्रयास सिर्फ़ इतिहास को सहेजना नहीं है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मज़बूत नींव तैयार करना है। 'मलेशिया-इंडिया हेरिटेज सोसायटी' जैसे प्रयास यह साबित करते हैं कि दृढ निश्चय के साथ अपनी संस्कृति की खुशबू को दुनिया के किसी भी कोने में महकाया जा सकता

है। यह 'ग्लोबल हेरिटेज' का वह रूप है जो हमें सिखाता है कि हम दुनिया में कहीं भी रहें, हमारी जड़ें हमें हमेशा जोड़े रखती हैं।

साझा विरासत

इतिहास के पन्नों को पलट कर देखें तो भारत और मलेशिया के तार गहराई से जुड़े नज़र आते हैं। चाहे वह औपनिवेशिक शासन से आज़ादी की साझा लड़ाई हो, पेनांग का बंगाल प्रेसीडेंसी का हिस्सा होना हो, या फिर मलाया में भारतीय एजेंट्स और सिपाहियों की अहम भूमिका, हर जगह एक अटूट रिश्ता दिखाई देता है। यहाँ तक कि मलाया की कानून व्यवस्था और समाज सुधारों पर भी भारतीय प्रभाव की छाप नज़र आती है। यह साझा विरासत सिर्फ़ इतिहास तक ही सीमित नहीं है; पारम्परिक चिकित्सा, संगीत और नृत्य जैसी कलाएं आज भी दोनों देशों की संस्कृति को एक सुर में पिरोए हुए हैं।

स्वच्छता के लिए जन भागीदारी

अरुणाचल के पर्वतों से चेन्नई के तटों तक

2 अक्तूबर, 2014 को शुरू किए गए स्वच्छ भारत मिशन (SBM) को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केवल एक स्वच्छता कार्यक्रम के तौर पर नहीं, बल्कि महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करने के लिए एक जन आंदोलन के तौर पर देखा था। *'न गंदगी करेंगे, न करने देंगे'* के प्रेरक मंत्र के तहत, इस मिशन ने **जन भागीदारी** के ज़रिए बहुत बड़ा मुकाम हासिल किया है।

स्वच्छ भारत के विज़न के साथ शुरू किया गया स्वच्छ भारत मिशन, एक सरकारी नीति से एक 'राष्ट्रीय आंदोलन' बन गया है। इसके मूल में जन भागीदारी यानी लोगों की भागीदारी का सिद्धांत है। भारत के अलग-अलग तरह के इलाकों में, अरुणाचल प्रदेश की ऊँचाई वाली जगहों से लेकर चेन्नई के तटीय इलाकों तक, आम नागरिक और पेशेवर अपने पर्यावरण की ज़िम्मेदारी उठा रहे हैं। इससे यह साबित होता है कि सिस्टम में बदलाव के लिए मिल कर काम करना सबसे ताकतवर तरीका है।

अरुणाचल प्रदेश में 'जय हिंद' का उत्साह

अरुणाचल प्रदेश में, सफाई के लिए अभियान एक विशेष सांस्कृतिक ऊर्जा से चलता है। गैर-सरकारी संगठन *यूथ मिशन फॉर क्लीन रिवर (YMCR)* के स्वयंसेवकों ने 'जय हिंद' के पारम्परिक अभिवादन को समाज सेवा के लिए एक प्रेरक उपाय के

रूप में परिणत कर दिया है। 2016 में ईटानगर में एक स्थानीय प्रयास के तौर पर शुरू हुआ यह मिशन नाहरलागुन, सेप्पा और पालिन जैसे इलाकों को कवर करते हुए कई शहरों में फैल गया है।

इस पहाड़ी इलाके में चुनौतियाँ बहुत बड़ी हैं। आईसीआर (ईटानगर कैपिटल रीजन) की नदियाँ घरेलू, मेडिकल और प्लास्टिक कचरे से काफी गंदी थीं। स्वयंसेवक अक्सर 'मिशन मोड' में काम करते हैं, मुश्किल इलाकों से होते हुए ट्रीटमेंट प्लांट तक भारी कचरे के बैग हाथ से ले जाते हैं। साज़ो-सामान सम्बंधी दिक्कतों जैसे कचरे को 20 किलोमीटर दूर डम्प साइट तक ले जाना और सरकारी मशीनरी की कमी के बावजूद, युवाओं की इस पहल ने 11 लाख किलोग्राम से अधिक कचरा सफलतापूर्वक हटाया है। उनका काम इस बात पर ज़ोर देता है कि 'नदियों और पहाड़ों की ज़मीन' को साफ रखना एक संवैधानिक और नागरिक ज़िम्मेदारी है।

असम में समुदाय की ज़िम्मेदारी

असम के नागाँव में भी स्थानीय गर्व की ऐसी ही भावना दिखती है। यहाँ, यह पहल ज़मीनी-स्तर पर शुरू हुई जब निवासियों के एक छोटे समूह ने अपने आस-पड़ोस को साफ करने का निर्णय किया, जिसकी शुरुआत एक स्थानीय मंदिर से हुई। जैसे-जैसे और लोग इसमें शामिल हुए, यह कोशिश तेज़ी से आगे बढ़ी और टीम 18 बनी।

यह प्रोजेक्ट दिखाता है कि जन भागीदारी कैसे एकता को बढ़ावा देती है। स्थानीय निवासियों ने न केवल गलियों और सड़कों से कचरा साफ किया, बल्कि उन्हें आर्टवर्क और पौधे लगाकर भी सजाया। म्युनिसिपल बोर्ड और सफाई कर्मचारियों के साथ मिलकर, टीम 18 ने एक निजी शौक को पूरे शहर के मिशन में बदल दिया। अपनी 'पुरानी सड़कों' के प्रति इस भावुक लगाव ने आपसी सहयोग और ज़िम्मेदारी की मिली-जुली भावना पर आधारित सफाई का एक टिकाऊ मॉडल बनाया है।

बेंगलुरु में शहरी कचरे का समाधान

बेंगलुरु में, स्वच्छता के तरीके ने अधिक तकनीकी और प्रक्रियात्मक मोड़ ले लिया है। फेंके गए सोफे और गद्दों जैसे भारी कचरे को संभालने में 'सिस्टम की नाकामी' को पहचानते हुए, 'द अग्ली इंडियन' (The Ugly Indian) से जुड़े पेशेवरों ने इस समस्या को यूनिट लेवल पर सुलझाने का निर्णय किया।

इंजीनियरिंग की सोच का इस्तेमाल करके, उन्होंने पाया कि एक सोफे को सिर्फ 15 मिनट में उसके हिस्सों लकड़ी, कपड़ा और फोम में अलग किया जा सकता है। इन 'पुरानी' चीज़ों को तोड़ कर, उन्होंने एक रिसाइकल होने वाली प्रणाली बनाई जिसे मौजूदा म्युनिसिपल सिस्टम आसानी से अपना सकता है। यह मॉडल केवल सफाई के बारे में नहीं है। यह समस्याओं के समाधान के बारे में है। यह बताता है कि 'बड़े पैमाने पर' रोज़गार का सृजन करके, शहर के कचरे की समस्या को हल कर सकते हैं और साथ ही रोज़गार और आजीविका भी दे

सकते हैं, और वह भी कम से कम पूंजी की लागत पर।

चेन्नई में तकनीकी नवाचार

यह मिशन चेन्नई के तटों और अन्य प्रमुख शहरों में उन्नत लैंडफिल माइनिंग (बायोमाइनिंग) के ज़रिए औद्योगिक-स्तर पर अपने सर्वोच्च मुकाम तक पहुँच चुका है। *ब्लू प्लैनेट* जैसी संस्थाएँ विशाल पुराने डम्प स्थलों से भूमि पुनः प्राप्त करके से ज़मीन वापस लेकर ज़ीरो वेस्ट और सर्कुलैरिटी के बीच की खाई को कम कर रही हैं।

2016 से इस पहल ने 1.7 करोड़ टन से अधिक कचरे का प्रसंस्करण किया है और 2,000 एकड़ ज़मीन को वापस पाया है। यह प्रक्रिया बहुत उन्नत है, जिसमें जैविक चीजों को रिसाइकल होने वाली चीजों से अलग करने के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण के लिए:

- **मिट्टी और पत्थर** : वापस पाई गई निष्क्रिय सामग्री का सड़क बनाने में दोबारा इस्तेमाल किया जाता है, जिससे नए खनन की ज़रूरत नहीं पड़ती।
- **आरडीएफ (रिफ्यूज डेराइव्ड फ्यूल)** : नॉन-रिसाइकल होने वाला ज्वलनशील कचरा सीमेंट प्लांट के लिए फ्यूल में बदला जाता है, जो कोयले की जगह लेता है।

समुद्र तट से जुड़ी यह कोशिश दर्शाती है कि जब शासन, पारदर्शिता और प्रौद्योगिकी का मिलन होता है, तो चेन्नई के बड़े लैंडफिल जैसी सबसे बड़ी पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी हल की जा सकती हैं।

अरुणाचल की नदियों से चेन्नई के लैंडफिल तक का सफर दिखाता है कि 'स्वच्छता' अब सिर्फ एक सरकारी आदेश नहीं है; यह एक साझा 'राष्ट्रीय धड़कन' है। चाहे किसी स्वयंसेवक का जोशीला 'जय हिंद' हो, नागाँव के कम्युनिटी पेंटब्रश हों, बेंगलुरु के इंजीनियर के एनालिटिकल टूल्स हों, या चेन्नई की एडवांस्ड बायोमाइनिंग मशीनें हों, जन भागीदारी वह इंजन है जो भारत को एक साफ भविष्य की ओर ले जा रहा है। जैसा कि ये अलग-अलग प्रोजेक्ट दिखाते हैं, हर एक कोशिश, जब लाखों लोगों की संख्या में बढ़ जाती है, तो देश को बदलने की ताकत रखती है।

"बात यह है कि यहाँ के लोगों के मन में सिविक सेंस होना चाहिए; एक ऐसा 'कल्चर' बनाने की ज़रूरत है जहाँ वे गंदगी न करें। स्वयंसेवक यहाँ आते हैं और हमेशा सफाई करते हैं; इस जगह को साफ रखना भी हमारी ज़िम्मेदारी है।"

~एडवोकेट एस डी लोढ़ा, चेयरमैन, टीम वाईएमसीआर

"जब भी एनजीओ के पास कोई काम होता है, जब हम ग्रीन ड्राइव करते हैं, तो 'जय हिंद' का नारा हमें देश के लिए कुछ करने की एक तरह की ऊर्जा देता है, जब हम 'जय हिंद' ज़ोर से बोलते हैं, तो हमारे अंदर एक तरह का पैशन आता है कि हम देश के लिए काम कर रहे हैं"

~कीओम डोनी, वाइस चेयरमैन, टीम वाईएमसीआर

"...हमने न सिर्फ पानी की जगहों पर सफाई करने की पहल की, बल्कि हमने स्कूलों और कार्यालय, सड़कों, जहाँ भी हमें सफाई करने की ज़रूरत महसूस हुई, वहाँ सफाई करने की पहल की। मैं कहूँगा कि उस समय में, बहुत सारे स्वयंसेवक हमारे कामों में लगातार आने लगे।"

~डॉ. मुल्लू दद्दा, कन्वीनर, क्रिएटिव डिपार्टमेंट, टीम वाईएमसीआर

"हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी ने 'क्लीन इंडिया' की अपील की थी। उसे अपनी प्रेरणा मानकर, मैंने सोचा, क्यों न अपने पड़ोस में कुछ शुरू किया जाए? बाद में, हम तीनों एक साथ आए और अपने दुर्गा मंदिर में काम शुरू किया।"

~सुब्रत दत्ता, वार्ड कमिश्नर, वार्ड नंबर -18, नागाँव म्युनिसिपैलिटी बोर्ड

"...आज, हमारे पास टीम 18 नाम की एक टीम भी है। गाँव के सभी लोग इस टीम का हिस्सा हैं। जब मोदी जी ने हमारी टीम 18 या हमारे गाँव के बारे में बात की, तो हमें बहुत अच्छा लगा। हमारा उत्साह बढ़ा, और इससे हमें और भी काम करने की प्रेरणा मिली।"

~सुभाष दास, व्यवसायी, नागाँव

"हमने इस गली को सच में बहुत सुंदर बना दिया है–इसे साफ किया, पेंट किया, आर्टवर्क किया और हमारे पास छोटे पौधे लगाने जैसे कार्य को जारी रखने का प्लान है। हम ऐसे ही सफाई करते रहेंगे। यहाँ सभी लोग मिलकर काम करते हैं, और हमारे एक-दूसरे के साथ बहुत अच्छे रिश्ते हैं।"

~मिथु देबनाथ, गृहणी, नागाँव, असम

"मैंने 'अग्ली इंडियन' नाम की एक ऑर्गनाइज़ेशन के लिए वॉलंटियर किया, जो चुपचाप, बिना नाम बताए काम करती है, और स्वच्छ भारत मिशन का बहुत बड़ा हिस्सा है। असल में, 2014 में 'अग्ली इंडियन' के बारे में एक 'टेड टॉक' (TED Talk) आई थी, जिसके बारे में माननीय प्रधानमंत्री ने ट्वीट किया था। यह एक बहुत जानी-मानी ऑर्गनाइज़ेशन है, जिसका एक ही मोटो है, काम चालू, मुंह बंद। बस] बाहर जाओ और करो। तो मैंने कहा, मैं एक सोफे की समस्या का समाधान करने की कोशिश करता हूँ, सड़क से शुरू करता हूँ, एक सोफा उठाता हूँ और देखता हूँ कि मैं उसके साथ क्या कर सकता हूँ। और मैंने घूम कर कचरा सिस्टम के बारे में लोगों से बात की।"

~अरुण पई, फाउंडर, बैंगलोरवॉक्स, इंदिरानगर, बेंगलुरु

"...शासन, पारदर्शिता, प्रौद्योगिकी और परीक्षण ही वह सब है जो हम लैंडफिल माइनिंग के इस तथाकथित स्पेस में लाए हैं। अब हम जो करते हैं, वह यह है कि जब हम प्रोसेस शुरू करते हैं तो हम उस जगह के पूरे माहौल को समझते हैं जहाँ हम काम कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, हमने गुवाहाटी में कई प्रोजेक्ट के लिए काम किया है, हमने वडोदरा में अनेक प्रोजेक्ट पूरे किए हैं, हमने नोएडा में प्रोजेक्ट किए हैं और हम चेन्नई में प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। तो, हमारे पास लगभग हर जगह, हर जगह की एक अलग टोपोग्राफी, माहौल, भूगोल है। इसलिए, हम जो मशीनें डिजाइन करते हैं, वे असल में इसे संभालने के लिए कस्टमाइज़ की जाती हैं।"

~नागेश प्रभु चिनिवर्था, को-फाउंडर और डायरेक्टर- सेल्स एंड मार्केटिंग, जिग्मा ग्लोबल एनवायरन सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, इरोड, तमिलनाडु

धरती के प्रहरी

भारत के हरित संरक्षकों का उत्सव

पर्यावरण संरक्षण प्रायः बड़े संस्थानों का कार्य और विशाल अभियान माना जाता है। लेकिन जैसा कि 'मन की बात' में कहा गया, यह वास्तविक और सार्थक बदलाव कई बार एक समर्पित व्यक्ति से ही शुरू होता है। वृक्षारोपण के क्षेत्र में बिनॉय दास के प्रेरणादायक प्रयास इसी भावना को अत्यंत सुंदर रूप में अभिव्यक्त करते हैं।

"मैं वर्ष 2010 से वृक्षारोपण कर रहा हूँ। इसके बाद वर्ष 2019 में हमने एक संगठन बनाया। हमारे संगठन में 140 सदस्य हैं। हम हर दिन वृक्षारोपण सम्बन्धी कार्य करते हैं। अब तक हम 5 छोटे वन विकसित कर चुके हैं। हमारा उद्देश्य कूचबिहार में ऐसे और छोटे वन तैयार करना है। अब तक हम लगभग 14 हज़ार पेड़ लगा चुके हैं। वर्ष 2024 में हमने बंगाल की पहली 'ट्री एम्बुलेंस' की शुरुआत की। हम 4 महीने तक वृक्षारोपण करते हैं और उसके बाद 8 महीने उनकी देखभाल करते हैं। यह हमारे लिए एक बड़ी उपलब्धि है। हमारा प्रयास रहता है कि हम लोगों को वृक्षारोपण के प्रति जागरूक करें।"

-बिनॉय दास, कूचबिहार, पश्चिम बंगाल

मध्य प्रदेश के पन्ना ज़िले के जंगलों में एक और शांत किंतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रयास आकार ले रहा है। वन रक्षक जगदीश प्रसाद अहिरवार ने 129 औषधीय पौधों की प्रजातियों का दस्तावेज़ीकरण किया है। उनका यह कार्य अब 'मेडिसिनल प्लांट्स ऑफ़ साउथ पन्ना' नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ है, जिसमें कालाहरी, बीजासर, गिलॉय, अडूसा, शतावरी और निर्गुंडी जैसे पौधों का उल्लेख है।

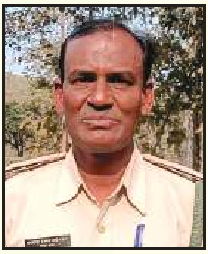

"मैंने प्रत्येक पौधे की तस्वीरें और उसका नाम, उपयोग और स्थान आदि से जुड़ी विस्तृत जानकारी एकत्र की। अपने सेवा काल के दौरान मैं ऐसी जानकारियाँ अपनी डायरी में दर्ज करता रहा था लेकिन पिछले एक वर्ष में हमारे प्रभागीय वन अधिकारी श्री अनुपम शर्मा की प्रेरणा से मैंने इस कार्य को व्यवस्थित रूप दिया।"

-जगदीश प्रसाद अहिरवार, वन रक्षक, मोहंद्रा वन क्षेत्र, पन्ना, मध्य प्रदेश।

"तस्वीरों और व्यावहारिक उपयोगों सहित जैव विविधता का ऐसा दस्तावेज़ीकरण जागरूकता बढ़ाता है। अधिक जागरूकता संवेदनशीलता को जन्म देती है, और यही संवेदनशीलता जैव विविधता के संरक्षण में सहायक होती है।"

-अनुपम शर्मा, आईएफ़एस (IFS), प्रभागीय वन अधिकारी, दक्षिण वन प्रभाग, पन्ना, मध्य प्रदेश

नन्हीं पौध सँवारने से लेकर पारम्परिक औषधीय ज्ञान का संरक्षण करने वाले नागरिक इस बात का उदाहरण हैं कि कैसे व्यक्तिगत संकल्प भारत के पर्यावरण आंदोलन को सशक्त बनाता है।

डॉ. देवेश चतुर्वेदी
सचिव
कृषि एवं किसान
कल्याण विभाग
भारत सरकार

श्री अन्न

सर्दियों में भारत को स्वस्थ रखने वाले पौष्टिक अनाज

'श्रीअन्न' के नए नाम से पुकारे जाने वाले मोटे अनाजों के साथ भारत का सम्बंध न तो अचानक बना है और न ही किसी विशेष घटना अथवा प्रसंग पर आधारित है। यह संबंध वास्तव में ऐसी खाद्य व्यवस्थाओं को फिर से अपनाने की दिशा में लोगों की गहरी मूल प्रवृत्ति को दर्शाता है जिन्हें भोजन में शामिल करने से शरीर स्वस्थ और चुस्त रहता है, ज़मीन की उर्वरक शक्ति बरकरार रहती है और किसान को मान-सम्मान मिलता है। माननीय प्रधानमंत्री ने जनवरी, 2026 में 'मन की बात' कार्यक्रम में बताया था कि 2023 में अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष मनाने के बाद से मोटे अनाजों के प्रति लोगों का उत्साह ज़ोरों पर है जिससे लोगों की सोच और सूझबूझ में बड़ा बदलाव होने का संकेत मिलता है।

अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष का महत्व

संयुक्त राष्ट्र महासभा की ओर से 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष' के रूप में मनाने की घोषणा की आवश्यकता भी थी और साथ ही, अवसर पैदा करने की भी घोषणा थी। जलवायु परिवर्तन के दबाव, जल-स्तर और जल संसाधनों में आती कमी तथा खेती से होने वाली आय की अनिश्चितता जैसे कारकों से निपटने के प्रयासों में मोटे अनाज सही और सटीक जवाब बनकर उभरे हैं। तेज़ गर्मी और पानी की कमी वाले इलाकों में भी अच्छी उपज देने वाले मोटे अनाजों में सी-4 फोटोसिंथेटिक पाथवे, बारिश पर निर्भर रहने वाले क्षेत्रों में निश्चित और भरोसे लायक उत्पादन देने वाले इन मोटे अनाजों की फसल के लिए खाद-बीज जैसे आदानों की भी खास ज़रूरत नहीं पड़ती। फिर खास खूबी यह है कि मोटे अनाज स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहद लाभदायक और उपयोगी होते हैं। इनमें फाइबर, प्रोटीन और सूक्ष्म पोषक तत्व भरपूर मात्रा में उपलब्ध रहते हैं जिससे पोषाहार या पोषण की कमी अथवा कुपोषण या अपोषण की समस्या का सबसे उपयुक्त समाधान भी इनसे हो जाता है।

भारत में तो सँयुक्त राष्ट्र की इस घोषणा से बहुत पहले ही मोटे अनाजों के इन गुणों को समझ कर 2018 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन शुरू किया गया था जिसके तहत पोषक अनाजों पर ही पूरी तरह ध्यान केंद्रित किया गया था। अब इसका नाम 'राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एवं पोषाहार मिशन' कर दिया गया है। भारत के सुझाव प्रस्ताव और 72 देशों के समर्थन पर संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष की घोषणा में लम्बे समय से चले आ रहे राष्ट्रीय दृष्टिकोण को व्यापक रूप देकर वैश्विक आकार प्रदान किया गया था।

माननीय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष को जन-आंदोलन का विस्तृत रूप प्रदान

किया गया। केंद्र सरकार, राज्य सरकारें, किसान, वैज्ञानिक, शेफ, स्टार्टअप्स तथा अंतरराष्ट्रीय संगठन एकजुट हो गए और नतीजा यह हुआ कि मोटे अनाजों पर चर्चा को महज जननीति निर्धारण कक्षों में ही सीमित न रखकर किचन (रसोई), बाज़ार और जन संस्थानों को इस समय चर्चा का अभिन्न अंग बना लिया गया। भारत ने विश्व में पहली बार अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज (श्रीअन्न) सम्मेलन आयोजित किया जिसमें 100 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इसमें माननीय प्रधानमंत्री ने आईसीएआर के भारतीय मोटे अनाज अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद को वैश्विक मोटा अनाज उत्कृष्टता केंद्र के रूप में मान्यता दी। भारत ने वैश्विक (अंतरराष्ट्रीय) प्रदर्शनियों और मेलों में मोटे अनाजों का प्रदर्शन किया तथा आसियान-भारत मोटे अनाज उत्सव के माध्यम से भारत और जकार्ता ने इन प्राचीन अनाजों के प्रति समूचे विश्व की प्रतिबद्धता को और सशक्त बनाया।

भारत के जी-20 समूह का अध्यक्ष होने की अवधि में कृषि कार्यदल की बैठकों में मोटे अनाजों को ज़बरदस्त प्रोत्साहन दिया गया तथा अन्य प्राचीन अनाज अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान पहल (महर्षि MAHA RISHI) भी शुरु की गई ताकि सीमा पार के अन्य देशों में भी इस दिशा में सहयोग बढ़ाया जा सके।

ज़ोरदार उत्साह, गहन अर्थ

सबसे अहम बात यह है कि 2023 के बाद से मोटे अनाजों के प्रति लोगों की रुचि ज़रा भी कम नहीं हुई बल्कि लगातार बढ़ रही है। संस्थानों की ओर से आयोजित किए जाने वाले सामूहिक ओज कार्यक्रमों, नए पकवान खोजने की दिशा में नई पहलों (नवाचारों) तथा जन नेताओं की ओर से मिल रहे प्रोत्साहनों से ये मोटे अनाज सामाजिक-आर्थिक समूहों का अनिवार्य अंग बन चुके हैं। उपभोक्ता ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में अपने खानपान में मोटे अनाजों को शामिल करते जा रहे हैं जो प्राचीन ज्ञान और आधुनिक पोषाहार विज्ञान के बीच का अद्‌भुत संगम बन कर शहरी और ग्रामीण इलाकों में भोजन की थाली का महत्वपूर्ण अंग बनते जा रहे हैं।

सर्दियों के लिए परम्परा पर आधारित सुपर फूड

पोषाहार की दृष्टि से देखा जाए तो मोटे अनाज 'सूपर फूड' या 'श्रेष्ठ भोजन के मानदंडों पर हर तरह से खरे उतर रहे हैं। इनमें फाइबर और प्रोटीन जैसे पाचक पोषक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं और लौह, कैल्शियम तथा ज़िंक (जस्ते) जैसे

सूक्ष्म पोषक तत्व भी प्रचुर मात्रा में रहते हैं। साथ ही, यह भी कि इनका ग्लाइसेमिक सूचकांक काफी कम होता है जिससे रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) की आशंका भी नहीं रहती। मोटे अनाज पाचन क्रिया में सुधार लाते हैं तथा इनके प्रयोग से उच्च रक्तचाप, कोलेस्ट्रॉल या फैट्स (चर्बी) बढ़ने जैसे जोखिम वाले लक्षणों से भी छुटकारा मिलता है। ये हृदय के सही प्रकार से काम करने में सहायक होते हैं तथा टाइप-।। डायबटीज़ या मोटापे जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियां भी दूर ही रहती हैं। ग्लूटेन या आंतों में चिपचिपाहट पैदा करने वाला पदार्थ भी मोटे अनाजों के इस्तेमाल के कारण नहीं बनता जिससे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

खानपान से जुड़े पारम्परिक ज्ञान से यह नई बात अच्छे से समझ आ चुकी है कि सर्दियों में ऐसा भोजन करना बेहतर रहता है जिससे शरीर में गर्माहट और ऊर्जा बनी रहे। कई मोटे अनाज और खासकर बाजरा थर्मोजेनिक होते हैं यानी इन्हें पचाने के दौरान शरीर में गर्मी पैदा होती है। तभी तो बाजरे जैसे मोटे अनाज सर्दियों में विशेष फायदेमंद रहते हैं। बाजर, ज्वार, रागी और छोटे वाले मोटे अनाजों को सर्दियों के मौसम में देश के लगभग सभी भागों में खाया जाता है। घी-गुड़ मिलाकर बना बाजरे का राब. रागी के लड्डु या घी में बनी बाजरे की खिचड़ी आराम और सुख देने के साथ ही ठंड से बचाव में भी खूब मदद करते हैं। आधुनिक ज्ञान भी अब इन मोटे अनाजों के पौष्टिक गुणों को स्वीकार करने लगा है, हालाँकि परम्परागत ज्ञान के हिसाब से तो इसे हम सब काफी पहले से जानते-समझते रहे हैं।

खेत, भोजन की थाली और स्वास्थ्य का संबंध

मोटे अनाजों से जुड़ा अभियान किसानों के लिए फायदेमंद और आय बढ़ाने में सहायक तो हैं ही बाज़ारों और पोषाहार से जुड़ी व्यवस्थाओं के लिए भी लाभकारी हैं। फसलों में विविधता लाकर मोटे अनाज उगाने से जलवायु की अनिश्चितता के मौजूदा माहौल में जोखिम कम रह जाता है। क्षेत्रों के अनुरूप सुधरी किस्में उगाने, खेती की वैज्ञानिक प्रणालियाँ अपनाने तथा विस्तार सेवाओं का फायदा उठा कर, देसी जानकारी में कोई फेरबदल किए बिना ही, उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। बाज़ार में मज़बूत संपर्क बनाने और मूल्यसंवर्धन तरीके (प्रसंस्करण) अपनाने से किसानों की आय बढ़ाने में बड़ी सहायता मिली है। मोटे अनाज सूखे की स्थिति को भी सह

सकते हैं और उनकी फसल जल्दी ही पक कर तैयार हो जाती है जिससे मानसून यानी बारिश कम-ज़्यादा होने पर भी इनकी उपज खराब नहीं हो पाती। इनकी खेती के लिए सिंचाई और कीटनाशकों जैसे खर्चीले आदान भी कम ही चाहिए होते हैं। ऐसे में दुनिया भर में सूपर फूड्स की माँग बढ़ने से इन मोटे अनाजों की प्रोसेसिंग करके निर्यात की संभावनाएँ बढ़ सकती हैं जिसका सीधा फायदा किसानों की आय बढ़ाकर मिलेगा।

उत्पादन-आधारित व्यवस्था की बजाय पोषाहार-आधारित कृषि मॉडल अपनाने से शेष खामियाँ दूर करने के वास्ते उपयुक्त नीति बनाई जा सकती है। स्कूलों में मिड-डे मील्स (दोपहर के भोजन) तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली में मोटे अनाजों को प्रमुखता देकर युवा पीढ़ी को अधिक पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जा सकता है। जैव समृद्ध किस्मों को मदद देकर और पौष्टिक तत्वों से भरपूर फसलों को प्रोत्साहन देकर इस बात की पक्की व्यवस्था हो सकती है कि स्वास्थ्य की देखभाल की सुरक्षित (निवारक) व्यवस्था खेतों से ही शुरू हो जिससे उन रोगों की रोकथाम हो सकेगी जो अनियमित जीवन शैली के कारण होते हैं।

वर्ष 2024-25 में भारत में मोटे अनाजों का कुल उत्पादन 185.82 लाख टन हुआ था और उत्पादकता भी 2020-21 के 1322 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर से बढ़कर 2024-25 में 1424 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गई थी। इससे पता चलता है कि अनुसंधान और बीज व्यवस्था पर निवेश बढ़ा कर तथा खेती के सुधरे तौर-तरीके अपना कर ही कामयाबी हासिल करना संभव हुआ है।

28 राज्यों और 2 केंद्रशासित प्रदेशों में एनएफएसएनएम के तहत न्यूट्रीसीरियल्स के बारे में उपमिशन चलाया जा रहा है ताकि देश में श्रीअन्न (मोटे अनाज) का उत्पादन बढ़ाया जा सके। आईसीएआर और राज्यों के कृषि विश्वविद्यालयों की अगुवाई में चल रहे शोध से अधिक उपज देने वाली, कीटरोधी और जैव समृद्ध किस्में विकसित की जा रही हैं जिनमें आईसीएआर के बीज केंद्र अहम भूमिका अदा कर रहे हैं। आईसीएआर-एनएआरएस प्रणाली से उत्तम कृषि प्रणालियों को बढ़ावा मिलता है, ब्रीडर बीज तैयार होते हैं तथा अधिकारियों और किसानों के समूहों को प्रशिक्षण दिया जाता है, मोटे अनाजों को उत्पादन-आधारित रखने की जगह मूल्यवर्धन के उद्देश्य से प्रोसेसिंग अपनाई जाती है, इनक्यूबेशन के लिए स्टार्टअप स्थापित किए जा सकते हैं तथा किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को मजबूत बनाया जा सकता है।

2021-22 से 2025-26 की छह वर्ष की अवधि में मोटे अनाजों के सरकारी खरीद मूल्य में औसतन 29 से 48 प्रतिशत की वृद्धि की गई जिससे दामों के अचानक घटने-बढ़ने की स्थिति में सुरक्षा प्राप्त हो तथा विविध फसलें उगाने की नीति भी सफल होती रहे। पीएम-किसान, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, कृषि बुनियादी ढाँचा कोष, ई-नैम और मृदा स्वास्थ्य कार्ड जैसी प्रमुख कृषि योजनाओं के साथ सामंजस्य बनाकर किसान अब आर्थिक सुरक्षा, खाद-बीज की व्यवस्था और बाज़ार संपर्क जैसी सुविधाओं के लाभ प्राप्त कर रहे हैं। मोटे अनाजों और इनके उत्पादों को दस राज्यों के इक्कीस ज़िलों में 'एक ज़िला एक उत्पाद' योजना के तहत शामिल किया गया जिसमें स्थानीय मूल्य संवर्धन शृंखलाओं और ब्रांड-विकास पर बल दिया जाता है। मोटे अनाजों से जुड़े अनेक स्टार्टअप्स और एफपीओ स्थापित हो जाने से इस बात में गहरा तालमेल बनने लगा है कि हमारे किसान क्या उगाएँगे और लोग क्या खाना पसंद करेंगे।

भारत में मोटे अनाजों की समूची यात्रा हमारे किसानों, हमारी खानपान से जुड़ी परम्पराओं तथा नीति और जन भागीदारी के सहारे टिकाऊ भविष्य को आकार देने की हमारी क्षमता के प्रति भरपूर विश्वास की कहानी है। 'श्रीअन्न' निश्चित ही हमारे स्वास्थ्य, लचीले रुख और साझी समृद्धि का सजीव प्रमाण हैं।

श्री अन्न

भूले-बिसरे अनाज से जन-आंदोलन तक का सफर

लम्बे अर्से से उपेक्षित और भूले-बिसरे हमारे मोटे अनाजों को हाल के वर्षों में 'श्री अन्न' घोषित किए जाने के साथ ही एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन की भी शुरुआत हो गई है। इन मोटे अनाजों के मूल्यवर्धित प्रसंस्करण को बढ़ावा देने के उद्देश्य में प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना तथा मोटे अनाजों से बनने वाले उत्पादों के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना जैसी सरकारी पहलों का समर्थन मिलने से किसान मोटे अनाजों से बनने वाले उत्पादों के प्रसंस्करण और उनके लिए हाट व्यवस्था खोजने के साथ ही नवाचार विकसित करने में पूरे विश्वास से जुटे हुए हैं। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया है कि तमिलनाडु और राजस्थान के किसान उत्पादक संगठन इस आंदोलन के जीवंत उदाहरण हैं।

"हमारी 800 महिला किसानों में से 50 प्रतिशत कल्लाकुरुचि ज़िले से और शेष 50 प्रतिशत सेलम ज़िले से हैं। खेती का मौसम न होने के दिनों में ये किसान काम की तलाश में कल्लाकुरुचि के पर्वतीय क्षेत्र से पास के कर्नाटक राज्य में मैसूर चली जाती थीं। हमने एक कम्पनी चलाकर इन महिलाओं के तमिलनाडु छोड़कर कर्नाटक जाने की प्रवृत्ति रोकने का प्रयास किया है। अब हमारी कम्पनी में मोटे अनाज के प्रसंस्करण की यूनिट बन गई है और एक बिक्री केंद्र भी कम्पनी के भीतर ही शुरू हो गया है। हमने 'मिलेट एशिया' नाम से अपने उत्पादों की बिक्री के लिए कम्पनियों के साथ समझौता करके ज़िला-स्तर के कंसोर्टियम (संगठन) की सदस्यता प्राप्त कर ली है। भविष्य में हम किसानों को लाभांश देने के उद्देश्य से मिलेट लड्डू और मिलेट कुकीज़ जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों की शुरुआत करके अपनी आमदनी बढ़ाएंगे। इस परियोजना के लिए केंद्र की ओर से लघु कृषक कृषि व्यापार संगठन तथा कृषि विभाग के माध्यम से मदद दी जा रही है। हम उनके बहुत आभारी हैं और प्रधानमंत्री के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं क्योंकि उन्होंने 'मन की बात' कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को प्रोत्साहित किया।"

-बी. शिवारानी, प्रबंध निदेशक,
पेरिया कलरायन मिलेट विमेन फ़ार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड, तमिलनाडु

“ हम अपनी कम्पनी में ऑर्डर मिलने के हिसाब से मिलेट लड्डू तैयार करते हैं। हम अमेजन जैसे प्लेटफॉर्मों पर पंजीकृत हैं। हमें बाजरे के लड्डू बनाने की प्रेरणा अपने घर-परिवार के बुजुर्गों से मिली क्योंकि वे लोग सर्दियों में देशी घी से बने इन स्वादिष्ट और पौष्टिक लड्डुओं का सेवन करते थे। जब मोदी जी ने मोटे अनाजों को 'श्रीअन्न' घोषित कर दिया तो हमने भी मोटे अनाज (बाजरे), अपनी गायों का शुद्ध घी, दूध, मेवे और गुड़ मिलाकर स्वादिष्ट और पौष्टिक लड्डू बनाने की विधि तैयार कर ली। जब हमने इन्हें खाया तो ये बहुत ही स्वादिष्ट लगे और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी काफी फायदेमंद रहे। स्थानीय लोग और बाहर

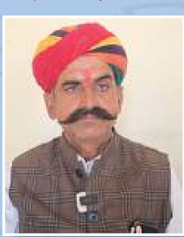

वाले भी इन लड्डुओं को बेहद पसंद कर रहे हैं। ये लड्डू पैकेजिंग के बाद तीन महीने तक ताज़ा रहते हैं। हम ज़रूरत के मुताबिक जैविक खेती के ज़रिए बाजरा उगाते हैं और कोई कीटनाशक इस्तेमाल नहीं करते। सिंचाई के लिए भी मौसमी बारिश ही काफी रहती है। ”

-पन्ना राम, निदेशक,

रामसर ऑर्गेनिक फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी, खड़ीन, बाड़मेर, राजस्थान।

मोटे अनाजों को अपने भोजन में और प्रसाद में शामिल किया जा रहा है जिससे इनका प्रयोग खाने के लिए तैयार पदार्थ के रूप में तथा ऑनलाइन बिक्री केंद्रों के ज़रिए होने लगा है। ये आत्मनिर्भरता, सामूहिक प्रयास और 'स्वस्थ भारत' की ओर बढ़ते कदमों का प्रतीक है।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

130वाँ संस्करण

आज 'मतदाता दिवस' पर मैं अपने युवा साथियों से फिर आग्रह करूँगा कि वे 18 साल का होने पर **voter** के रूप में खुद को जरूर **register** करें।

हमें स्वच्छता के लिए व्यक्तिगत तौर पर या फिर टीम के तौर पर अपने प्रयास बढ़ाने होंगे, तभी हमारे शहर और बेहतर बनेंगे।

आइए इस वर्ष हम पूरी ताकत से **quality** को प्राथमिकता दें। ... हम संकल्प लें **quality** में ना कोई कमी होगी, ना **quality** से कोई समझौता होगा।

बहुत जरूरी है कि हम देश में वोटर बनने का, मतदाता बनने का, उत्सव मनाएं ...जब भी कोई युवा पहली बार मतदाता बने तो पूरा मोहल्ला, गाँव या फिर शहर एकजुट होकर उसका अभिनंदन करे और मिठाइयाँ बांटी जाएं।

हमारे देश में सर्दियों का मौसम तो खानपान के लिए बहुत ही अच्छा माना जाता है। ऐसे में इन दिनों हमें श्रीअन्न का सेवन जरूर करना चाहिए।

Bhajanlal Sharma
@BhajanlalBjp

Show translation

माननीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने वर्ष 2026 के प्रथम #MannKiBaat कार्यक्रम में राजस्थान के बाड़मेर जिले के रामसर स्थित 'Ramsar Organic Farmer Producer Company' एवं हमारे परिश्रमी किसानों द्वारा 'श्रीअन्न' बाजरे से निर्मित पौष्टिक लड्डुओं के अभिनव प्रयोग का गौरवपूर्ण उल्लेख कर प्रदेश की कीर्ति को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया है।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी का यह स्नेहिल प्रोत्साहन न केवल हमारे अन्नदाताओं में नवीन उत्साह और ऊर्जा का संचार करेगा, अपितु 'श्रीअन्न' को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सशक्त पहचान दिलाने की दिशा में मील का पत्थर भी सिद्ध होगा।

प्रधानमंत्री जी के इस प्रेरणादायी संबोधन हेतु कृतज्ञता के साथ उनका हार्दिक आभार।

Jayanta Mallabaruah
@jayanta_malla

Listened to the 130th episode of "Mann Ki Baat" by Hon'ble PM Shri @narendramodi ji this morning, along with local residents and party karyakartas at Nagrijuli, Tamulpur.

In his address on National Voters' Day and the eve of Republic Day, Hon'ble Prime Minister delivered a powerful message on our democratic responsibility. His call to the youth to register as voters and his insights into India's milestone of 10 years of Startup India further strengthened our collective resolve to build a Viksit Bharat.

I also extend my heartfelt thanks to Hon'ble Prime Minister for highlighting the commendable cleanliness initiative from Nagaon, Assam, which serves as an inspiration for us all.

Dilip Saikia 🇮🇳
@DilipSaikia4Bjp

Hon'ble PM Shri @Narendramodi Ji heaps praise on the efforts of Assam and Arunachal Pradesh in ensuring cleanliness, recycling and "Waste to Wealth", in today's edition of "Mann Ki Baat".

Dr. S. Jaishankar
@DrSJaishankar

In the first #MannKiBaat of 2026, PM @narendramodi highlighted:

🔹 the vital role of Indian diaspora in preserving and advancing Indian culture and festivals across the world.

🔹 the emphasis on Indian languages promotion in Malaysia, including the presence of 500+ Tamil schools, imparting regular education in Tamil.

🔹 Malaysia India Heritage Society's recent "Lal Paad Saari" iconic walk, showcasing Bengali culture, Odissi dance and Baul music.

🔹 the curiosity and respect for India's family system globally, with the UAE celebrating 2026 as the Year of the Family to strengthen harmony and community spirit among its people.

🔹 the upcoming AI Impact Summit in India, which will present 🇮🇳's achievements and progress in artificial intelligence to the global community.

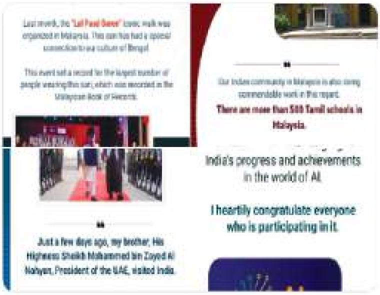

Pema Khandu
@PemaKhanduBJP

Hon PM Shri @narendramodi Ji, in the 130th episode of Mann Ki Baat, acknowledged the inspiring work of our Arunachali youths from Youth Mission for Clean River who are cleaning rivers and streets across towns in the state.

This national recognition is a huge boost to youth-led community service and environmental responsibility. Proud of our young volunteers for leading by example and serving society with such dedication.

Jai Hind!

Pabitra Margherita
@PmargheritaBJP

📍Guwahati, Assam

Listened to Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji's Mann Ki Baat live today from Booth No. 90, Barhanti Rangamati Rajapukhuri Gaon Panchayat, Rampur Mandal, Palashbari LAC.

The Prime Minister spoke about the "Zero Defect, Zero Effect", the remarkable journey of Startup India, and how Indian startups are driving excellence across diverse sectors including AI, semiconductors, mobility, green hydrogen, biotechnology, textiles and electronics, reaffirming that Made in India stands for quality and global competitiveness.

Grateful to Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji for highlighting Assam and acknowledging the impactful, community-led cleanliness initiatives in Nagaon, reflecting the passion and commitment of our youth towards Swachh Bharat, recycling and the vision of Waste to Wealth.

Vijay Baghel
@vijaybaghelcg

Show translation
Mann Ki Baat: PM Modi ने बताए मिलेट्स खाने के फायदे, जानिए सेहत के लिए कैसे है अमृत के समान
ndtv.in/lifestyle/pm-m...

via NaMo App

Mann Ki Baat: PM Modi ने बताए मिलेट्स खाने के फायदे, जानिए सेहत के लिए कैसे है अमृत के समान

NDTV JANUARY 26, 2026

Pradeep Bhandari(प्रदीप भंडारी)🇮🇳
@pradip103

"This trend is being called 'bhajan clubbing' today, and it's becoming increasingly popular":

PM @narendramodi Ji praises Gen Z for redefining devotion ✨

During the 130th episode of Mann Ki Baat, Narendra Modi lauded India's youth for beautifully blending faith with modern expression.

PM Modi noted that bhajans and kirtans have been the soul of Indian culture for centuries, and today's Gen Z has embraced this timeless devotion in a fresh, vibrant way. Across cities, young people are gathering in large numbers—stages lit up, energy high, an atmosphere like a concert—yet the soul of the gathering is a bhajan.

Suvende Adhikari
@SuvenduWB

Tuned in to Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi Ji's Mann Ki Baat along with @BJP4Bengal Karyakartas & Supporters at Nandigram.
Today, Hon'ble PM paid rich tributes to Netaji Subhas Chandra Bose. He linked Republic Day, the Constitution, and Elections, emphasizing the central role of every Voter in Indian Democracy on National Voters' Day. He reminded that the Constitution came into force on January 26, marked as Republic Day, providing an opportunity to honour the framers. PM Modi explained that voting is not just a right but a duty in a Democracy, and suggested that when young people vote for the first time, neighbors, villages, or city communities should meet, greet them, and share sweets to spread awareness and strengthen active voting habits.
PM Modi Ji saluted young people associated with start-ups or aspiring to start one, and urged improving the quality of Indian products in sectors like textiles, technology, electronics.

Chandrakant Patil
@ChDadaPatil

Show translation
2026 मधील #MannKiBaatचा पहिला भाग राष्ट्रीय मतदार दिनानिमित्त पार पडला.

मतदार होण्याचा क्षण हा उत्सवाचा असावा, कारण मतदार असणे ही केवळ एक ओळख नसून, तो एक मोठा सन्मान आणि जबाबदारी आहे.
-मा पंतप्रधान नरेंद्र मोदी जी

#MannKiBaat

@BJP4India @narendramodi @NitinNabin @AmitShah @blsanthosh @CMOMaharashtra @Dev_Fadnavis @mieknathshinde @AjitPawarSpeaks @BJP4Maharashtra

ਦੁਨੀਆ ਦਾ ਤੀਜਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਸਟਾਰਟ-ਅੱਪ ਕੇਂਦਰ ਬਣ ਗਿਆ ਹੈ ਭਾਰਤ: ਮੋਦੀ

معیارات پر سمجھوتہ کرنے کا دور ختم

हर भारतीय उत्पाद हो सर्वोत्तम गुणवत्ता का पर्याय : मोदी

मन की बात : पीएम ने कहा-होता है, चलता है का युग चला गया, हम सबका एक ही मंत्र हो-बेहतर गुणवत्ता

भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप

मन की बात का 130वां एपिसोड: पीएम ने देशवासियों को किया संबोधित

भारत की असली ताकत जन-संकल्प: मोदी

स्टार्ट अप इंडिया की धाक, देश की बढ़ती अर्थव्यवस्था समेत कई मुद्दों पर की बात

குறைபாடுகளே இருக்கக்கூடாது

இந்திய பொருட்கள் உயர் தரத்துடன் இருக்க வேண்டும்

'மனதின் குரல்' நிகழ்ச்சியில் பிரதமர் மோடி வலியுறுத்தல்

மோடி

من کی بات میں وزیر اعظم نے کشمیر کے گاؤں میں منشیات کے خلاف جدوجہد کو سراہا

شیخ گنڈ، اننت ناگ میں عوامی کوششوں سے منشیات کے خلاف بیداری، دکانوں پر تمباکو کی خرید و فروخت بند

دی او آئی

سرینگر/وزیر اعظم نریندر مودی نے اپنے ماہانہ ریڈیو پروگرام "من کی بات" کے تازہ ترین ایپی سوڈ میں جنوبی کشمیر کے ضلع اننت ناگ کے گاؤں شیخ گنڈ کی منشیات کے خلاف اجتماعی جدوجہد کو اجاگر کیا۔ انہوں نے کہا کہ یہ مثال ظاہر کرتی ہے کہ عوامی شمولیت اور سماجی ذمہ داری کے ذریعے بڑے مسائل پر قابو پایا جاسکتا ہے۔ وزیر اعظم نے قوم سے خطاب کرتے ہوئے کہا کہ گاؤں میں منشیات، تمباکو، سگریٹ اور شراب سے متعلق مسائل میں نمایاں اضافہ ہوا تھا، جس نے مقامی باشندے میر جعفر کو سخت تشویش میں مبتلا کیا۔ انہوں نے اس مسئلے کے حل

/ جاری صفحہ نمبر ۱۱پر

اسٹارٹ اپس میں معیار کو بینچ مارک بنائیں

وکست بھارت کیلئے زیرو ڈیفیکٹ، زیرو ایفیکٹ ضروری: وزیراعظم

[illegible]

'मतदान का अधिकार भविष्य में भागीदारी का प्रतीक'

मन की बात में पीएम मोदी ने पहली बार वोट डालने को लोकतंत्र में सक्रिय भागीदारी का उत्सव बताया

[illegible]

मन की बात • पीएम बोले- 10 साल में भारत तीसरा सबसे बडा स्टार्टअप इकोसिस्टम बना

चलता है का दौर खत्म, सिर्फ क्वालिटी मंत्रः मोदी

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा- 'चलता है' की सोच के साथ देश आगे नहीं बढ़ सकता। हर सेक्टर में क्वालिटी को ही सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। उन्होंने स्टार्टअप और उद्योग जगत से अपील की कि वे सिर्फ क्वालिटी को मंत्र बनाएं। भारतीय उत्पादों को विश्वस्तरीय पहचान दिलाने के लिए काम करें। रविवार को इस साल के पहले रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में पीएम ने कहा, भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। यह जरूरी है कि जो भी भारत में बने, उसकी गुणवत्ता वैश्विक मानकों पर खरी उतरे। टेक्सटाइल, टेक्नोलॉजी, इलेक्ट्रॉनिक्स या पैकेजिंग- हर भारतीय उत्पाद टॉप क्वालिटी का प्रतीक बनना चाहिए। अब संकल्प लेना चाहिए, क्वालिटी, क्वालिटी और सिर्फ क्वालिटी। मन की बात के 130वें एपिसोड में पीएम ने स्टार्टअप इंडिया के 10 साल पूरे होने का जिक्र किया। कहा- जनवरी 2016 में शुरू हुई यह पहल तब कई लोगों को समझ में नहीं आई। देश के युवाओं ने जोखिम उठाया, नए प्रयोग किए और इसे जन आंदोलन बना दिया। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है। देश के स्टार्टअप एआई, अंतरिक्ष, न्यूक्लियर एनर्जी, सेमीकंडक्टर, मोबिलिटी, ग्रीन हाइड्रोजन और बायोटेक्नोलॉजी जैसे सेक्टर में काम कर रहे हैं। आज देश में 2 लाख से ज्यादा मान्यता प्राप्त स्टार्टअप हैं।

जीरो डिफेक्ट, जीरो इफेक्टः पीएम ने स्वतंत्रता दिवस पर दिए 'जीरो डिफेक्ट, जीरो इफेक्ट' संदेश को दोहराया। कहा- टिकाऊ और प्रतिस्पर्धी मैन्युफैक्चरिंग के जरिए ही विकसित भारत का लक्ष्य मिलेगा।

यूएई की 'ईयर ऑफ द फैमिली' पहल को सराहा

पीएम ने यूएई द्वारा 2026 को 'ईयर ऑफ द फैमिली' घोषित करने की सराहना की। उन्होंने इसे भारत की पारिवारिक परंपरा से जोड़ा। पीएम ने गुजरात के चंदनकी गांव के सामुदायिक रसोई मॉडल का जिक्र करते हुए कहा कि परिवार और समुदाय सामाजिक मजबूती की बुनियाद हैं।

મનકી બાત • ગુજરાતના ચંદનકીના રસોઇ મોડલનો ઉલ્લેખ

'ચાલે છે' નો યુગ સમાપ્ત, હવે માત્ર ક્વૉલિટી મંત્રઃ PM મોદી

ભાસ્કર ન્યૂઝ | નવી દિલ્હી

વડાપ્રધાન નરેન્દ્ર મોદીએ કહ્યું- 'ચાલે છે' ની વિચારસરણીની સાથે દેશ આગળ વધી શકતો નથી. દરેક સેક્ટરમાં ક્વૉલિટીને જ સર્વોચ્ચ પ્રાથમિકતા આપવી પડશે. તેમણે સ્ટાર્ટઅપ અને ઉદ્યોગ જગતને અપીલ કરી છે કે તેઓ માત્ર ક્વૉલિટીને મંત્ર બનાવે. ભારતીય ઉત્પાદનોને વિશ્વસ્તરીય ઓળખ અપાવવા માટે કામ કરો. રવિવારે આ વર્ષના પહેલો રેડિયો કાર્યક્રમ 'મન કી બાત' માં વડાપ્રધાન મોદીએ કહ્યું કે ભારતની અર્થવ્યવસ્થા તેજીથી વધી રહી છે. અહીં જરૂરી છે કે જે પણ વસ્તુ ભારતમાં બને તેની ગુણવત્તા વૈશ્વિક માનકોમાં ખરી ઉતરે. ટેક્સટાઇલ, ટેક્નોલોજી, ઇલેક્ટ્રોનિક્સ તથા પેકેજિંગ- દરેક ભારતીય ઉત્પાદન ટોપ ક્વૉલિટીનું પ્રતીક બનવું જોઇએ. હવે સંકલ્પ લેવો જોઈએ કે ક્વૉલિટી, ક્વૉલિટી અને માત્ર ક્વૉલિટી. મન કી વાતના 130મા એપિસોડમાં વડાપ્રધાને કહ્યું કે સ્ટાર્ટઅપ ઈન્ડિયાના 10 વર્ષ પૂર્ણ થવાનો પણ ઉલ્લેખ કર્યો હતો. તેમણે કહ્યું કે જાન્યુઆરી 2016 માં શરૂ થયેલી આ પહેલ ત્યારે ઘણા લોકોમાં સમજમાં આવી નહોતી. દેશના યુવાનોએ જોખમ ઉઠાવ્યું, નવા પ્રયોગો કર્યા અને તેને જન આંદોલન બનાવી દીધું. ભારત વિશ્વનું ત્રીજું સૌથી મોટું સ્ટાર્ટઅપ ઈકોસિસ્ટમ છે. દેશના સ્ટાર્ટઅપ એઆઈ, અવકાશ, ન્યૂક્લિયર એનર્જી, સેમિકન્ડક્ટર, મોબિલિટી, ગ્રીન હાઈડ્રોજન અને બાયોટેક્નોલોજી જેવા સેક્ટરમાં કામ કરી રહ્યાં છે. આજે દેશમાં 2 લાખથી વધુ માન્યતા પ્રાપ્ત સ્ટાર્ટઅપ છે.

ઝીરો ડિફેક્ટ, ઝીરો ઈફેક્ટ વડાપ્રધાનએ સ્વતંત્રતા દિવસ પર આપેલા 'ઝીરો ડિફેક્ટ, ઝીરો ઈફેક્ટ' સંદેશનો દોહરાવ્યો હતો. તેમણે કહ્યું કે ટકાઉ અને પ્રતિસ્પર્ધી મેન્યુફેક્ચરિંગના માધ્યમથી વિકસિત ભારતનું લક્ષ્ય મળશે.

PM hails 10 years of India's start-up leap

HT Correspondent

[illegible]

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi on Sunday opened the year's first Mann ki Baat with a popular social media trend of revisiting the year 2016, using the moment to recall the launch of Start-up India, and highlighted how far the ecosystem has come in a decade.

In the 130th episode of his Mann ki Baat, the PM said in January 2016, the Centre launched an "ambitious journey" that many did not fully understand at the time. That journey, he said, was Start-up India. Today, Modi said, India has become the world's third-largest start-up ecosystem, with young entrepreneurs working in sectors that were "unimaginable even 10 years ago," including AI, space, nuclear energy, and semiconductors. He applauded young founders even as he made a strong pitch for focusing on quality in the manufacturing industry. "The era of 'it just happens, it works somehow' is over," he said, urging companies to make "quality, quality and only quality" their mantra. Repeating his call for "Zero Defect, Zero Effect" from his I-Day address last year, Modi said Indian products — from textiles to electronics to packaging — should become synonymous with top quality as India moves towards a Viksit Bharat. "I want to urge my countrymen, especially the youth associated with industry and Start-ups. India's economy is progressing rapidly. The world is watching India. At such a juncture, we all shoulder a huge responsibility. That responsibility is to emphasise on quality," he said.

The PM also mentioned the India AI Impact Summit, which will be held from February 15-20, bringing heads of state, global CEOs and experts to India to discuss the country's progress in AI.

On the eve of Republic Day, Modi also paid tribute to the Constitution and the founding fathers, and highlighted January 25 as National Voters' Day even as he urged young voters to register as soon as they turn 18.

He also appreciated a new trend called "bhajan clubbing" where devotional songs are played in concert-like settings. The PM also touched upon the spirit of public participation as he highlighted successful examples of citizens reviving water bodies and green areas, planting of "2,000 million trees the Ek Ped Maa Ke Naam campaign", and the strong public interest in growing and consuming millets.

युवक हे 'स्टार्टअप इंडिया'चे नायक

पंतप्रधान मोदी यांचे प्रतिपादन; भजन क्लबिंगचेही कौतुक

विविध उपक्रमांचा उल्लेख

Mann Ki Baat

PM Modi highlights Republic Day, voter participation, India's start-up push

BK News Service
New Delhi, Jan 25

Prime Minister Narendra Modi on Sunday said the first Mann Ki Baat of 2026 comes on the eve of Republic Day, a day that marks the coming into force of the Constitution and offers an opportunity to pay homage to its founding fathers.

He also noted that January 25 is observed as National Voters' Day, Matadata Diwas, and described the voter as the soul of democracy.

In his address, the PM said that attaining the right to vote at 18 should not be seen as a routine milestone but as a significant moment in an Indian citizen's life.

He suggested that first-time voters should be cel-

» See PM Modi...on Pg 05

जेन जी में तेजी से लोकप्रिय हो रही है 'भजन क्लबिंग' : पीएम मोदी

मन की बात: प्रधानमन्त्रीले भनेः तमसा नदीको पुनरुद्धार सबैको प्रयासको परिणाम

---

130 ویں 'من کی بات' پروگرام میں بولے مودی

بھارتیہ پروڈکٹس کی پہچان دنیا میں اعلیٰ ترین معیار کے طور پر ہونی چاہیے

ووٹر ہونا صرف آئینی اختیار نہیں بلکہ اہم ذمہ داری ہے

मन की बात कार्यक्रम में बोले प्रधानमंत्री

18 साल की उम्र होते ही सबसे पहले मतदाता सूची में अपना नाम जुड़वाएं

PM Modi praises Gen Z trend of 'bhajan clubbing', says it's heartening to see dignity, purity maintained

NEW DELHI:Prime Minister Narendra Modi on Sunday heaped praise on the 'bhajan clubbing' trend, started by the Gen Z, and said that it was "heartening" to see that the dignity and purity of the devotional songs are maintained at events like these.

He mentioned that even though the platform is modern, a continuous sense of spirituality is experienced there.

In the 130th episode of his monthly radio programme, 'Mann Ki Baat', PM Modi said, "In our country, bhajans and kirtans have been the soul of our culture for centuries. We have listened to bhajans in temples, during kathas, and every era has embodied Bhakti according to respective times."

Today's generation is also achieving "something spectacular", he said, adding, "Today's youth have incorporated the spirit of devotion into their experiences and lifestyles. This thinking has given rise to a new cultural trend. You must have seen such videos on social media."

"Large numbers of the youth are gathering in different cities across the country. The stage is decorated... There is lighting, music... There is all the pomp and show, and the atmosphere is no less than a concert. It feels like a huge concert, but what is being sung there is the resonance of bhajans sung with complete concentration, dedication, and rhythm. Today, his trend is being called 'bhajan clubbing', and it's becoming increasingly popular, especially among Gen Z," the Prime Minister said.

He commended the younger generation for upholding the decorum of words and emotions, as well as the purity of the devotional songs during the 'bhajan clubbing' events.

"It is heartening to see that the dignity and purity of bhajans are maintained at these events. Devotion is not taken lightly, neither the decorum of words nor the emotion is compromised.

देश-विदेश

'मन की बात' में कहा – मतदाता बनना अहम पड़ाव, इसका जश्न मनाएं

वोटर ही लोकतंत्र की आत्मा, असली भाग्य विधाता: मोदी

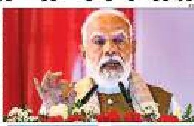

PM का संदेश

'टॉप क्वॉलिटी हो भारत की पहचान'

मन की बात : पर्यावरण संरक्षण में आम नागरिकों के प्रयासों से आ रहा बदलाव

राष्ट्रीय समाचार ब्यूरो

'Mann Ki Baat

PM calls on youth to strengthen democracy

>> Urges them to register, vote

IANS

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi on Sunday urged the youth of the nation to register as voters when they turn 18, thereby strengthening India's democracy and fulfilling their constitutional duty as citizens.

Addressing the 130th episode of his monthly radio programme, 'Mann Ki Baat', PM Modi said, "Tomorrow, on January 26, we will celebrate our Republic Day. On this day, our Constitution came into force. This day gives us an opportunity to pay homage to the architects of the Constitution."

While noting that January 25, Sunday, is also an "important day", he said, "Today is the National Voters' Day. The voter is the soul of

MORE ON PAGE 6

Young voters can transform destiny of country, says PM

Times News Network

New Delhi: PM Narendra Modi Sunday described voters as the soul of democracy and called for celebrating the youth, who have come of age, as individuals who hold the power to transform the destiny of the country.

School and college campuses can be hubs for movements that ensure every eligible youth is enrolled as a voter, the PM said, emphasising that the National Voters' Day is an ideal occasion for the movement and celebrations every year.

Modi's emphasis on the importance of voters in a letter to volunteers of MY Bharat, a govt-run youth empowerment initiative, appeared to be a pointed counter to Congress leader Rahul Gandhi's "vote chori" campaign against his govt and Election Commission.

The Prime Minister said that to be a voter is the "greatest privilege and responsibility in a democracy". "The voter is the Bhagya Vidhata of our development journey," he said. "Our first-time voters should be welcomed into democracy as individuals who hold the power to transform the destiny of our country," he added.

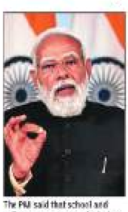

The PM said that school and college campuses can be hubs for movements which ensure that every eligible youth is enrolled as a voter

Modi said that he was connecting with them as a fellow citizen who takes great pride in Indian democracy.

This year marks the 75th anniversary of the first general election which illustrated the inherent democratic spirit of Indians, he emphasised. "That indelible ink on a finger is a badge of honour that ensures democracy remains vibrant and purposeful, Modi added.

He said that "at home and in our residential societies, we can celebrate the same (first-time voters) by sharing sweets. Our schools and colleges have a vital role to play as nurseries of democratic values." It should be observed joyously like a birthday, the Prime Minister added.

"People's commitment to voting is so deep that whether they live high in the Himalayas, in the islands of Andaman and Nicobar, in deserts or in dense forests, they turn up to ensure their voice is heard," Modi said.

He also touched on the issue in his monthly 'Mann ki Baat' broadcast, lauding voters as the soul of democracy.

In his letter, Modi said the participation of women, especially young ones, is crucial for an inclusive democracy. The volunteers of the platform — MY-Bharat — belong to a generation that does not wait for things to happen, but actively participates in making things happen with a "can do" spirit, he said, asking them to spread awareness about the importance of becoming a voter.

The Prime Minister said, "Let us resolve to make every effort towards strengthening our democracy and creating a developed, inclusive and self-reliant Bharat."

Indian products should offer top quality: Modi

In *Mann Ki Baat* address, Prime Minister says world is watching India's economic progress, and country has become third-largest start-up ecosystem globally in sectors such as AI, semiconductor

The Hindu Bureau
NEW DELHI

Prime Minister Narendra Modi on Sunday urged all manufacturing sectors, including start-ups, to focus on "quality" and make "excellence" their benchmark, stating this would only help accelerate the journey towards a "Viksit Bharat (Developed India)".

> We all shoulder a huge responsibility to emphasise quality... Only by doing this shall we be able to accelerate the journey towards a Viksit Bharat
>
> NARENDRA MODI
> Prime Minister

During his *Mann Ki Baat* address, Mr. Modi said the world was watching India's economy progress. "At such a juncture, we all shoulder a huge responsibility to emphasise quality... the connotation of an Indian product should become 'top quality'. I had expressed from Red Fort : 'Zero Defect Zero Effect'. Only by doing this shall we be able to accelerate the journey towards a 'Viksit Bharat'," he said.

Mr. Modi said the country had now become the third largest start-up ecosystem in the world, involving sectors such as artificial intelligence, nuclear energy, semiconductors, mobility, green hydrogen, and biotechnology. "I salute all my young friends who are associated with one start-up or the other or want to start one of their own," the Prime Minister said.

Stating that people across the country were coming up with innovative solutions, Mr. Modi said that in Azamgarh, Uttar Pradesh, the local people cleaned the Tamsa river, which crosses Ayodhya and merges with the Ganga, and planted fruit trees along its banks. In Anantapur, Andhra Pradesh, which grappled with drought, people revived more than 10 reservoirs and planted over 7,000 trees.

A day ahead of Republic Day, he said the occasion was an opportunity to pay homage to the founding fathers of the Indian Constitution. "Today is National Voters' Day... a voter is the soul of democracy," he said, acknowledging the contributions of all those people in the country who were involved in the electoral process and work at the grassroots level to keep the country's democracy vibrant. He urged the youngsters turning 18 to register themselves as voters.

Mr. Modi spoke about the emerging trend of "bhajan clubbing" in different cities across the country, noting that today's generation had incorporated the spirit of devotion in their lifestyles.

"Today our culture and festivals are making their mark across the world... our Bharatavanshis, brothers and sisters of Indian origin, play a vital role in maintaining cultural vibrancy... our Indian community in Malaysia is also doing commendable work in this regard," he said, adding that there were over 500 Tamil schools in Malaysia and, along with Telugu and Punjabi, there was also a lot of focus on other Indian languages.

The Prime Minister underscored the unique tradition of community kitchen in Chandanki village of Becharaji, Gujarat, continuing for the past 15 years. A tiffin service is also available for the unwell. "In many countries, such family systems are highly respected. Just a few days ago, my brother, His Highness Sheikh Mohammed bin Zayed Al Nahyan, President of the UAE, visited India. He conveyed to me that the UAE is celebrating 2026 as the Year of the Family," he said.

Mr. Modi spoke about the importance of millets in reference to the efforts of farmers in Tamil Nadu's Kallakurichi and Ramsar in Rajasthan. About 800 women farmers are associated with the Periyapalayam Millet FPC in Kallakurichi. Over 900 in Ramsar are associated with the Ramsar Organic Farmer Producer Company, primarily cultivating pearl millet which is processed to prepare ready-to-eat laddus.

PM'S MANN KI BAAT: DEMOCRACY, START-UPS AND CULTURE IN FOCUS

PM Modi, in the 130th Mann Ki Baat, stressed voter participation, quality-led growth and public participation.

Prime Minister Narendra Modi.

PM Modi urges Indian industry, start-ups to embrace quality as India emerges as global innovation leader

'Green Benoy' in *Mann ki Baat*

MAIN UDDIN CHISTI

Cooch Behar: Cooch Behar's Green Benoy found mention in the Prime Minister's *Mann ki Baat* addressed to the nation on Sunday.

Benoy Das, 54, with over two decades of afforestation work behind him, lives in Cooch Behar town.

"....we often think of big plans, large campaigns and major organisations, but often change begins in a very simple way.... the effort of Benoy Das from Cooch Behar in West Bengal is one such shining example," said Prime Minister Narendra Modi.

Green activist Benoy Das.
Picture by Main Uddin Chisti

"For several years now, he had been working single-handedly to make his district greener. Benoy Das ji has planted thousands of trees, many times, from purchasing saplings to planting them and taking care of them, he has borne the entire expenses himself wherever required he collaborated...," Modi added.

Das said he was overwhelmed.

"When the Prime Minister mentions a small-town man like me from Cooch Behar, it is a very big achievement," Das said.

A resident of Hazra Para, Das holds a postgraduate degree in Sanskrit and works with the Archaeological Survey of India at the Cooch Behar Palace, where he has been posted since 2010. Yet his identity has long transcended his professional role.

For over two decades, Das has been planting trees entirely on his own initiative and at his own expense. So far, more than 13,500 saplings planted by him have taken root across the town. Beyond individual trees, he has also helped create five small forests in Cooch Behar by scattering seeds across riverbanks and abandoned land — efforts that together account for nearly 30,000 trees.

His daily routine begins at 5am and continues till 9am, hours he dedicates exclusively to his green mission. Around four months of the year are spent planting saplings, while the remaining eight go into watering, protecting, fencing, and nurturing the trees.

ವರ್ಷದ ಮೊದಲ ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನಿ ನರೇಂದ್ರ ಮೋದಿ ಅಭಿಮತ

ಮತದಾರರೇ ಪ್ರಜಾಪ್ರಭುತ್ವದ ಆತ್ಮ

ಗುಣಮಟ್ಟದ ಮಂತ್ರ

ಸ್ಟಾರ್ಟಪ್ ಚರ್ಚೆಯ ಟ್ರೆಂಡ್

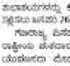

ಭಕ್ತಿ ಸಂಗೀತದತ್ತ ಜೆನ್-ಜಿ

ಮಲೇಷ್ಯಾದಲ್ಲಿ ತಮಿಳು ಶಾಲೆ

ಆರೋಗ್ಯ ರಕ್ಷಣೆಗೆ ಸಿರಿಧಾನ್ಯ

ಬೆಂಗಳೂರಿನ ಸ್ವಚ್ಛತಾ ಕಾರ್ಯದ ಕುರಿತು ಮೋದಿ ಮೆಚ್ಚುಗೆ

Let's make top quality products, Modi tells youth in Mann ki Baat

Indian start-ups working in diverse areas, says PM

Mann Ki Baat

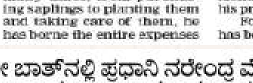

PM lauds Sheikhgund's anti-drug effort

BK NEWS SERVICE

Srinagar, Jan 25 : In his Mann Ki Baat address, Prime Minister Narendra Modi spoke about Sheikhgund village in Anantnag, praising a powerful community-led effort to combat substance abuse. He said that when the collective strength of family and society comes together, even the toughest challenges can be overcome.

The Prime Minister referred to the growing menace of drugs, tobacco, cigarettes and alcohol in the village, which deeply disturbed Mir Jafar, a local resident. Determined to bring change, Mir Jafar mobilised the entire community, uniting youth and elders alike against the social evil.

PM Modi noted that the impact of this initiative was remarkable, with shops in the village stopping the sale of tobacco products. The campaign also significantly enhanced public awareness about the harmful effects of drugs, setting an inspiring example of community-driven social reform.

आज तक

UAE ने 2026 को घोषित किया 'परिवार का साल', PM मोदी ने मन की बात में सराहा

भारत EXPRESS
सत्य • साहस • समर्पण

Mann ki baat 2026: گجرات کا وہ گاؤں جہاں گھروں میں نہیں جلتا چولہا: 'من کی بات' میں وزیر اعظم مودی نے سنایا حیرت انگیز قصہ

दैनिक भास्कर

मन की बात- पीएम ने मतदाता दिवस की शुभकामनाएं दीं: कहा- नए वोटर्स के लिए मिठाई बांटें, भारत दुनिया का तीसरा बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम

DECCAN Chronicle

In Mann ki Baat, PM Modi calls for zero-defect, high-quality manufacturing

ETV بھارت

بھارت دنیا کا تیسرا سب سے بڑا اسٹارٹ اپ ایکو سسٹم بن گیا: پی ایم مودی

INDIA TODAY

Mann ki Baat: PM urges 'zero compromise' on quality to build developed India

millenniumpost

PM Modi: Indian products must be synonymous with top quality

नईदुनिया

'भारत बना दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम', मन की बात के 130वें एपिसोड में पीएम मोदी

NDTV

'भारत की असली ताकत जन-संकल्प', मन की बात कार्यक्रम में बोले पीएम मोदी

PEOPLE'S UPDATE

TRUSTED · TIMELY · TRANSPARENT

मन की बात : 130 वें एपिसोड में मोदी ने वोटर्स- डे की शुभकामनाएं दी, देश के स्टार्टअप इकोसिस्टम पर भी बोले PM

THE ECONOMIC TIMES

PM Modi praises UAE's 'Year of the Family' initiative; draws parallels to Indian culture in Mann ki Baat

THE NEW INDIAN EXPRESS

PM lauds Anantapur's water revival efforts on Mann Ki Baat

ThePrint

Modi hails youth-led cleanliness initiative in Arunachal

The Tribune

ਪੰਜਾਬੀ ਟ੍ਰਿਬਿਊਨ दैनिक ट्रिब्यून

PM hails youth for making village tobacco-free

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

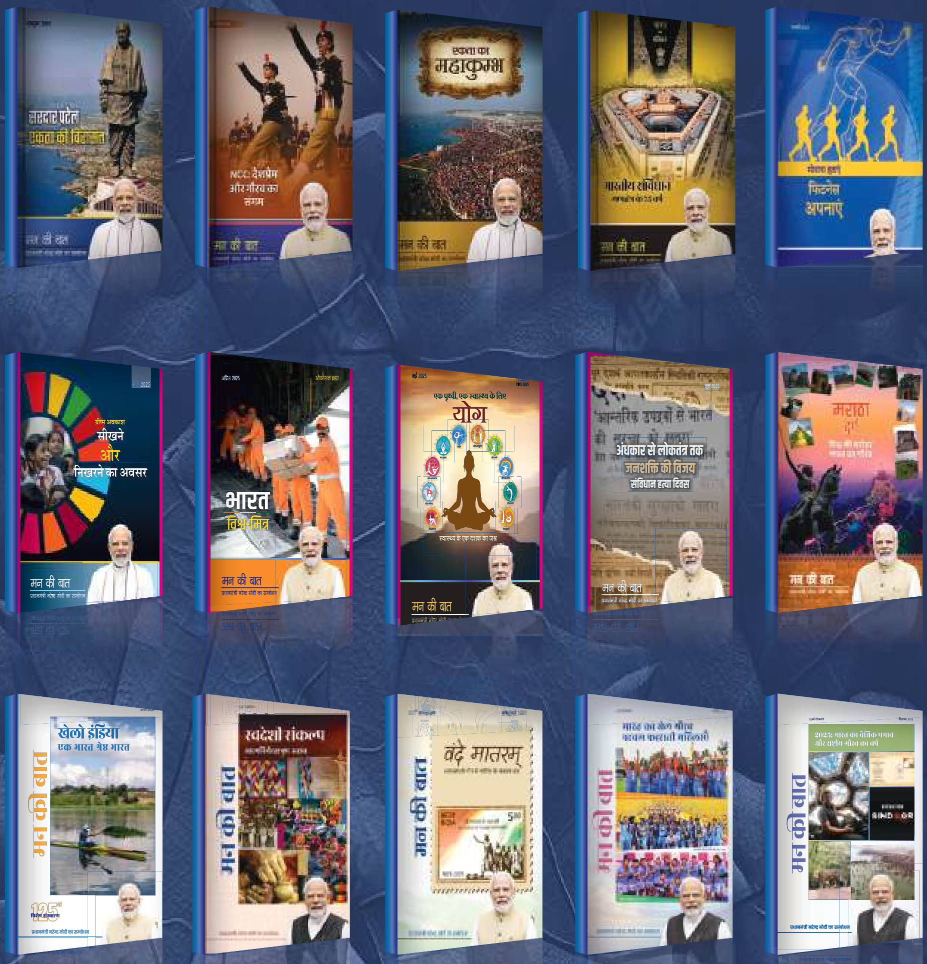

आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं! हमें इस ईमेल एड्रेस पर लिखें : mkb-mib@gov.in

भारत में आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इको सिस्टम बन चुका है। ये स्टार्टअप्स लीक से हट के हैं। आज वे ऐसे सेक्टर्स में काम कर रहे हैं, जिनके बारे में 10 साल पहले तक कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। एआई, स्पेस, न्यूक्लियर एनर्जी, सेमी कंडक्टर्स, मोबिलिटी, ग्रीन हाईड्रोजन, बायोटेक्नोलॉजी... आप नाम लीजिए और कोई न कोई भारतीय स्टार्टअप उस सेक्टर में काम करते हुए दिख जाएगा।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

कें. सं. ब्./ हिन्दी/ फरवरी 2026

केंद्रीय संचार ब्यूरो
द्वारा मुद्रित

मै. जेके ऑफसेट ग्राफिक्स, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित